thearyasamaj.org

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुर: कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अरावण:॥

आर्य संकल्प

(बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष-37 अगस्त अंक-7

महर्षि दयानन्द सरस्वती

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यालय : श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 (बिहार)

thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

सम्पादक
रमेन्द्र कुमार गुप्ता
मो. 9334184136

सह सम्पादक
संजय सत्यार्थी
मो. 9006166168
प्रेम कुमार आर्य
मो. 9570913817

सम्पादक मंडल
पं० व्यासनन्दन शास्त्री
श्री बिन्देश्वरी शर्मा
मो. 8544088138

संरक्षक
गंगा प्रसाद
सभा प्रधान

कोषाध्यक्ष
सत्यदेव गुप्ता
स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन
नयाटोला, पटना-800 004
दूरभाष : 07488199737
E-mail_arya.sankalp3@gmail.com
सदस्यता शुल्क
एक प्रति : 15/-
वार्षिक : 120/-

मुद्रक :
जय उमा प्रिन्टर्स
मो. 9430246879

संपादकीय

वेद प्रचार ही जीवन ध्येय

ऋषिवर दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। यह उन्होंने तब लिखा जब वेद के महत्त्व को उन्होंने स्वयं अनुभव कर लिया था। चूकि वेद प्रचार का कार्य ही ऋषि की वसीयत रही है, इसलिये आर्य समाज ने वेद प्रचार को अपना लक्ष्य बनाया और ऋषि के बाद अनेक वैदिक विद्वानों ने इसे धरा पर देदीव्स्यमान किया। वेद की महत्ता और आवश्कता को समझते हुए दुनिया के आर्य समाजों में श्रावण पूर्णिमा से ले कर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया जाने लगा। इस अवसर पर आम लोगों को भी वैदिक विचारों को श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ।

लोगों ने वेद कथाओं के माध्यम से वेदों, उपनिषदों और धर्म ग्रंथो को समझा और उसपर स्वाध्याय प्रारम्भ किया। स्वाध्याय से आत्म बोध जाग्रत होने लगा साथ ही जीवन पवित्र बनने लगा। जो व्यक्ति वेद की पावन ऋचाओं को पढ़ेगा, उनका स्वाध्याय करेगा, तो उनमें जो सदुपदेश दिये गये हैं- जैसे मनुष्यों को अपने माता, पिता, आचार्य आदि का आदर सत्कार करना चाहिये। वे जो सदाचार, शिष्टाचार की शिक्षा दे उसे आचरण में लाना चाहिए आदि ऐसे उपदेशों से समाज में

thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

-: सूची :-

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	
2.	वेद मंत्र	1
3.	पांच वर प्रभु के संग	2
4.	हैदराबाद के जननायक	11
5.	श्री कृष्ण चरित्र	30
6.	समाचार	32

इस पत्रिका में दिये गये लेख लेखकों के अपने विचार हैं, इससे सम्पादक का कोई सम्बन्ध नहीं है ।

अगस्त

विद्वानों का कर्त्तव्य

अभ्यर्षित सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा
द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य
धारा मधुमत्पवन्ते॥

(ऋग्वेद 4/47/10)

पदार्थ- (**देवता**) हे सब सुखदाता परमेश्वर! आप (**अस्मासु**) हमारे अन्दर (**आजिम्**) प्रशंसित (**गव्यम्**) वाणी की तथा (**भद्रा**) सुखदायी (**द्रविणानि**) धनों को (**धत्त**) धारण कराइये। हे ईश्वर! आप (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) यज्ञ को (**नः**) हमारे लिए (**नयत**) प्राप्त कराइये। जैसे (**मधुमत्**) मधुर सुखदायी गुण से युक्त (**घृतस्य**) घृत वा ज्ञान की (**धाराः**) धाराएँ वा वाणियाँ (**पवन्ते**) पवित्र करती हैं, वैसे ही आप हमें भी पवित्र करके (**सुष्टुतिम्**) उत्तम प्रशंसा को (**अभि, अर्षत्**) प्राप्त कराईये।।

भावार्थ- जो मनुष्य मधुर और कल्याणकारिणी वाणी बोलते हैं, पवित्र धन को प्राप्त करते हैं तथा प्रतिदिन सन्ध्या, हवनादि पञ्चयज्ञों को करते हैं, वे ही उत्तम सुख को प्राप्त करते हैं तथा समाज में यशस्वी होते हैं।

काव्यरूपान्तरण-

हे परमेश्वर! हम लोगों को,
शुभ वाणी गुण सिखलाओ।
हम सबका हित करता है जो,
आज यज्ञ यह करवाओ ॥ 1 ॥
घृत-धारा ज्यों पावन करती,
त्यों पावन हम को कर दो।
शुभ कर्मों का ज्ञान कराके,
उत्तम यश जीवन भर दो ॥ 2 ॥

■

thearyasamaj.org

पांच वर प्रभु के संग आत्मविश्वास

लेखक- डॉ० देवशर्मा वेदालंकार, नई दिल्ली

पिछले अंक का शेष.....

अंगस्पर्श से आत्मविश्वास

कई बार व्यक्ति अपने अंगों में आये कष्ट, दर्द परेशानी से दु:खी हो जाता है। बार-बार उसी दु:ख का वर्णन करता है। यदि अंग कमजोर हो तो कोई भी कार्य ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है।

प्रश्न: ऐसे में व्यक्ति क्या करें?

उत्तर: अपने अंगस्पर्श करें।

प्रश्न : इसके पीछे क्या रहस्य है?

उत्तर : इससे पहले आचमन किया और यह प्रार्थना की कि हे भगवन्। आप मुझे **'श्री वाला'** बना दीजिए।

प्रश्न : क्या केवल प्रार्थना करने से प्रभु 'श्री वाला' बना देगा?

उत्तर : नहीं। ऐसी तो हम अनेक प्रार्थनाएँ करते हैं जैसे- **हमें धन-ऐश्वर्यों के स्वामी बना दीजिए।** परन्तु एक और मन्त्र में भगवान् अपने भक्तों को सावधान करते हुए कहते हैं- कहीं यह धन तुम्हें दबा न ले।'' अर्थात् जिस धन को तुने प्राप्त किया है वह धन कहीं तुम्हें गलत रास्ते पर न ले जाये। अक्सर देखा जाता है कि जब धन आपको प्राप्त हो जाता है तब बुद्धि काम करना छोड़ देती है और मनुष्य ऐसे-ऐसे काम करने लगता है जो करने योगय नहीं होते हैं। यदि कोई समझाने की कोशिश करता है तो वह कहता है कि मैं अपना पैसा खर्च कर रहा हूँ किसी से लेता नहीं हूँ **गलत रास्ते पर चलता हुआ मनुष्य अपने को सही साबित करता है।** इसलिए प्रभु मनुष्यों को सावधान करते हुए कहते हैं कि तुम मेरे अनुसार चलो। तभी तुम्हारी प्रार्थना सुनी जाएगी।

दूसरी प्रार्थना- मुझे सुपथ पर ले चलो। परमात्मा कहते है- मौत के कदमों को दूर हटाते हुए चलो। मौत के कदम हर समय मनुष्य का पीछा कर रहे हैं। और जैसे ही असावधान होता है मौत के कदम उसको दबोच लेते हैं। इसलिए प्रार्थना करने वाले मनुष्य को सावधान होकर चलने का निर्देश करते हैं। इससे पता चलता है कि केवल प्रार्थना से काम चलने वाला नहीं है उसके अनुरूप परिश्रम करना पड़ेगा। इस प्रकार परमात्मा ने हमारी प्रार्थना को भी हमारे ऊपर छोड़ दिया है। इससे पता चलता है कि ईश्वर उन्हीं की रक्षा करता है जो अपनी रक्षा स्वयं करने में तत्पर रहते हैं।

thearyasamaj.org

प्रश्न : यदि भगवान् प्रार्थना नहीं सुनते हैं तब आपकी प्रार्थना 'श्री वाला' बना दो का क्या होगा?

उत्तर : इसीलिए तो अंगस्पर्श करने का विधान किया है।

प्रश्न : अंगस्पर्श का तरीका क्या है?

उत्तर : तरीका बहुत वैज्ञानिक है बस समझने की आवश्यकता है।

अपने बांये हाथ की हथेली में थोड़ा सा जल लेकर दांये हाथ की दो बड़ी-बड़ी अंगुलियों को पानी में डुबों कर अपने अंगों पर लगाना है।

प्रश्न : यह तो बड़ा आसान है आप कह रहे हैं कि यह बड़ा वैज्ञानिक है।

उत्तर : कुछ लोग यह आपत्ति कर सकते हैं कि ये ही दो अंगुली क्यों? और कोई दो अंगुली क्यों नहीं? जब व्यक्ति साधना में बैठते हैं तो हाथों की एक मुद्रा बनाकर बैठते हैं। अंगूठा और अंगूठे के पास वाली अंगुली को मिलाकर एक चक्र सा बना लेते हैं। शेष तीनों अंगुलियाँ सीधी रहती हैं। इन तीनो अंगुलियों में एक सबसे छोटी दूसरी उससे बड़ी तीसरी सबसे बड़ी है। यहाँ प्रकृति, जीव और ईश्वर तीनों की जानकारी होती है। जो सबसे छोटी है वह प्रकृति का प्रतीक है वह केवल सत् है सत् का अर्थ है हमेशा रहने वाली। उससे बड़ी जीव की ओर संकेत करती है यह सत् भी है चित् भी है चित् का अर्थ चेतन Living thing है। यह दोनों के बीच में है। सबसे बड़ी ईश्वर का प्रतीक है क्योंकि इसमें सत्-चित् और आनन्द तीनों का संकेत है। इस प्रकार पता चला प्रकृति जड़ जीव चेतन और ईश्वर चेतन और आनन्द स्वरूप है। **जीव का स्थान बीच में है। एक ओर जड़ प्रकृति दूसरे ओर चेतन परमात्मा। अब प्रश्न होता है जीव किधर जाये?** प्रकृति की ओर या परमात्मा की ओर? स्वाभाविक रूप से देखें तो **जीव को परमात्मा की ओर जाना चाहिए क्योंकि परमात्मा में आनन्द है और जीव को भी आनन्द की तलाश है।** परन्तु यह प्रकृति की ओर जाता है। जो केवल जड़ है जहाँ केवल सुख व दुःख है आनन्द नहीं हैं स्वाभाविक रूप से देखें तो प्रकृति की प्रत्येक वस्तु अपने सम्बन्धी की ओर जा रही है जैसे अग्नि सूर्य की ओर, फल टूटकर पृथ्वी की ओर और जल समुद्र की ओर जा रहा है परन्तु एक मात्र जीव ही है जो अपने सम्बन्धी ईश्वर को छोड़कर प्रकृति की ओर जा रहा है। जबकि उसको परमात्मा की ओर जाना चाहिए। **इसीलिए दो बड़ी-बड़ी अंगुलियाँ जब मिलती हैं तो ऐसा लगता है कि जीव परमात्मा के साथ आ गया है और अंगूठा जो अंहकार का प्रतीक है उसका सिर नीचा हो गया है।** जीवात्मा

thearyasamaj.org

परमात्मा के साथ तो रह सकता है उसके ऊपर से छलांग नहीं लगा सकता है और यदि इसने परमात्मा की अवहेलना कर दी तो संकट में फँस जायेगा। बड़ी अंगुली के बाद में छोटी अंगुली और अंगूठे ने मिलकर जो गोल चक्र बनाया हुआ है वह संकट का प्रतीक हैं इसलिए दोनों बड़ी-बड़ी अंगुलियाँ (मध्यमा व अनामिका) से ही अंगस्पर्श करें। यही इसकी वैज्ञानिकता है।

प्रश्न : अंगस्पर्श कैसे करें?

उत्तर : अंगस्पर्श करने का भी एक नियम है। अंगों का स्पर्श करते हुए अंगों को स्पर्श करना है। पहले दाहिनी तरफ फिर बायीं ओर स्पर्श करें। सबसे पहले मुख का स्पर्श करें।

प्रश्न : सबसे पहले पैरों का स्पर्श करना चाहिए क्योंकि पैर ही व्यक्ति को गलत जगह लेकर जाते हैं।

उत्तर : यह तो ठीक है कि पैर ही लेकर जाते हैं परन्तु मुख यदि कुछ अच्छा बोल देता है तो कुछ हानि नहीं होगी और यदि पैर अच्छी जगह ले गये और वहाँ मुख ने कुछ कड़वा बोल दिया तो हानि अधिक होगी। इसलिए पहले मुख का स्पर्श करने का नियम है। क्योंकि मुख सबसे अधिक हानि करता है। दुनिया में नब्बे प्रतिशत झगड़े मुख के कारण हैं।

वाणी की साधना

वाणी को सम्भालना, उसकी तपस्या करना प्रथम साधना है। मुख मानव शरीर में प्रमुख स्थान रखता है। सबसे पहले जल का स्पर्श मुख पर ही किया जाता है और मन्त्र बोला जाता है- **बाङ्म आस्येऽसतु- मेरे मुख में वाणी होवे।** जब बच्चा इस दुनिया में आता है तो उसकी जिह्वा पर ओ३म् लिखा जाता है। सोने की सलाई से शहद और घी मिलाकर बच्चों के जिह्वा पर ओ३म् लिखा जाता है जिसका अभिप्राय है कि ओ३म् ईश्वर का मुख्य एवं निज नाम है। यह जिह्वा तुम्हें परमात्मा के पवित्र नाम का उच्चारण करने के लिए मिली है। दुरुपयोग करने के लिए नहीं मिली। इसलिए शुरू से ही जिह्वा पर ओ३म् लिखकर कटु वचन बोलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। ऋषियों ने इस वाणी को ब्रह्मसंशिता एवं परमेष्ठिनी कहा है। वाणी का सम्बन्ध ब्रह्म से है। बहुत से ऐसे प्राणी है। जिनकी जिह्वा बोल नहीं सकती है। अपने दु:खों व कष्टों को बता नहीं सकती है। एक बैल जो बैलगाड़ी में जुता हुआ है जिसमें बहुत सारा सामान लदा हुआ है। परिस्थितिवश बग्गी टूट जाती है और सारा सामान बैल के पैर पर गिर जाता है और बेल का पैर टूट जाता है। उसको पीड़ा होती है, दर्द भी होता है पर वह किसी से कह नहीं सकता। यह उसके लिए सजा है दूसरी ओर मनुष्य को थोड़ा

thearyasamaj.org

सा भी कष्ट हो जाए तो वह कुछ भी बोल देता है। वह यह समझ ही नहीं पाता कि वाणी न होने का कष्ट क्या होता है? यदि वह इसको समझ पाता तो इसका दुरुपयोग कभी नहीं करता। इसलिए इस प्रक्रिया के द्वारा यह समझाया गया है कि **वाणी एक अनमोल रत्न है और बिना साधना के यह रत्न नहीं चमक पाता है** इसलिए इसकी साधना बड़ी आवश्यक है। **भगवान् श्रीराम को यह श्री इसलिए मिली कि उन्होंने कभी भी वाणी का दुरुपयोग नहीं किया।** जब उन्हें वन जाने को कहा गया तो उन्होंने बदले में कुछ भी ऐसा नहीं बोला जो वाणी का दुरुपयोग साबित कर सकें। उनकी वाणी में साधना थी, तपस्या थी जिसके बल पर उनको **श्री** प्राप्त हुई। मुख पर जल लगाने से अभिप्राय वाणी की साधना से है और वाणी की साधना होती है गाने से। इसलिए परमात्मा ने हमें सामवेद के रूप में मानो संगीत की विद्या तथा संगीत का महत्त्व प्रदान किया है। कुछ लोग जब गाते हैं तो उनका संगीत परमात्मा की अनुभूति कराता है। ऐसे लोगों को God Gifted ईश्वर की देन कहते हैं। उनमें से लता मंगेश्कर भी एक है। ईश्वर ने क्या कण्ठ उनको प्रदान किया है परन्तु जब उनसे कोई पूछता है कि आपके ऊपर ईश्वर की असीम अनुकम्पा है तो वह कहती है हाँ ईश्वर की तो कृपा है परन्तु मैं प्रतिदिन 10-12 घण्टे अभ्यास करती हूँ। कहीं बोलते समय मेरा सुर बेसुरा ना हो जाये। जब हम अपनी ओर देखते हैं तो विचार करने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि हम कितने मिनट अभ्यास करते हैं? जिससे कि बोलते समय हमारे मुख से कटु तो अवश्य हमें इस साधना के लिए निकालना चाहिए। वैसे ऋषियों ने हमारे प्रतिदिन के व्यवहार में हमको सावधान किया और इस साधना के लिए एक प्रक्रिया भी दी। और वह प्रक्रिया है **सगीत की प्रक्रिया।** हम जब रात में सोते हैं तो उस समय में भी कुछ मन्त्रों को गाकर सोने का विधान है।

जिसका अभिप्राय है कि व्यक्ति तनाव मुक्त होकर सोएगा और सुबह तनाव मुक्त होकर उठेगा फिर से गाएगा। इसलिए प्रात:काल के समय गाने के मन्त्रों की भी व्यवस्था की गई है।

उसके बाद नहाने जाते हैं वहाँ पर भी कुछ लोग कह सकते हैं कि तुम्हें गाना नहीं आता इसलिए तुम्हें नहीं गाना चाहिए। परन्तु स्नानागार में बन्द होकर जब आप गाएंगे तो आपकी आवाज मधुर हो जाएगी तब आपको कोई रोकेगा भी नहीं इसलिए गाना चाहिए। नहाने के पहले, खाना खाने से पहले, गाने से आपका मन प्रसन्न हो जाएगा। भोजन भी आपको स्वादिष्ट लगेगा। इस प्रकार गायन का विधान सब जगह इसलिए किया गया है जिससे कि उसको गाने

thearyasamaj.org

का अभ्यास हो जाए। उसकी वाणी में मधुरता आए और कटुता निकल जाए। इसलिए मुख पर जल लगाकर इसकी साधना, इसकी तपस्या, इसकी उपयोगिता पर चिन्तन किया जाता है। यह सबसे महत्त्वपूर्ण साधना है।

प्राण साधना

प्राण साधना- आत्मविकास की साधना की कड़ी में वाक् साधना के पश्चचात् प्राण साधना आती है। इस साधना में थोड़ा सा जल नासिका के दोनों छिद्रों पर लगाते हैं और मन्त्र में बोलते हैं- ''**मेरी नाक में प्राण हो।**'' अर्थात् प्राण शक्ति हो। प्राण महत्त्वपूर्ण है। शरीर का संचालन प्राण के द्वारा ही होता है। इस स्थूल शरीर का विश्लेषण करें तो दो वस्तु सरलता से समझ में आती हैं- एक शरीर दूसरा आत्मा। शरीर स्थूल है पाँच तत्त्वों से बना है। आत्मा सूक्ष्म है, जो नित्य है, शाश्वत है जो किसी चीज से नहीं बनी है। दो के सम्बन्ध से शरीर क्रिया करता है। मन दोनों के बीच में है जो दोनों का सम्बन्ध बनाता है। आत्मा जो भी काम कराना चाहता है मन के सहयोग से शरीर से कराता है। मन को नियन्त्रण में रखने के लिए यदि कोई समर्थ है तो वह है ''प्राण''। इसलिए सम्पूर्ण शरीर जो कुछ भी है उनमें प्राण ही महत्त्वपूर्ण है। इस शरीर में इसका आना जाना ठीक प्रकार से हो सकें इसके लिए नाक का निर्माण किया। इससे पता चलता है कि प्राण के कार्य करने का स्थान नासिका है कुछ लोग मुख से श्वास लेते व छोड़ते हैं जो गलत है इसलिए मन्त्र में कहा गया है- ''नसोर्म प्राणोऽस्तु'' मेरी नाक में प्राण हो।

प्रश्नः प्राण सामान्य रूप से आता जाता है। फिर इसे 'प्राण-साधना' कहकर साधना के अन्तर्गत क्यों रखा गया है?

उत्तर : साधना से अभिप्राय है 'नियन्त्रण' जब तक कोई वस्तु नियन्त्रण में है तो लाभदायक है और नियन्त्रण से बाहर है तो हानिकारक है। यह सब जानते हैं कि श्वास का काम सामान्य रूप से आना-जाना है परन्तु यह ठीक नहीं है। इस विद्या को समझने से पहले हमें यह समझना आवश्यक होगा कि इस प्राण का काम क्या है?

प्राण का काम- हम चाहते हैं कि हमारे शरीर का प्रत्येक अंग स्वस्थ हो और ठीक प्रकार काम करें। ''**अरिष्टानि मे अङ्गानि**'' **मेरे अंग स्वस्थ हों।** ऐसी मन्त्र में प्रार्थना की गयी है और पूरे शरीर पर जल छिड़कें तथा अनुभव करें कि मेरे अंग पुष्ट ही रहे हैं। प्राण ही है जो इन सभी अंगों का ध्यान रख सकता है। जहाँ प्राण है वहीं स्वास्थ्य है। जब हमारा श्वास सामान्य रूप से चलता है तो सभी अंगों में नहीं पहुँच पाता है। जहाँ यह नहीं पहुँच पाता है वे ही कमजोर पड़ जाते हैं, कहीं कंपन शुरू हो जाती है, कहीं

thearyasamaj.org

अकड़न, कहीं जकड़न। शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग लीवर, किडनी, फेफड़े, हृदय, मस्तिष्क कमजोर पड़ने लगते हैं।

प्रश्न : सभी अंगों में प्राण को कैसे पहुँचायें?

उत्तर : यह एक सबसे महत्त्वपूर्ण विचार है। **''प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्''** सब कुछ प्राण के वश में है और प्राण जिसके वश में है सब कुछ उसके वश में है। यहाँ संक्षेप में ही इसका वर्णन हो सका। इसका विशद वर्णन चतुर्थ अध्याय में किया जायेगा। यहाँ दो अंगों पर ही प्रकाश डाला गया है अन्य 14 अंगों की साधना स्थान अभाव से नहीं दे पाये हैं। इसे आप हमसे सीख सकते हैं।

दीपक से आत्मविश्ववास

जब हम हवन कुण्ड (वेदी) में अग्नि जलाकर हवन शुरू करते हैं तो पहले दीपक जलाने का नियम है। **ओं भूः भुवः स्वः** बोलकर दीपक जलाते हैं।

प्रश्न : क्या दीपक जलाना जरूरी है?

उत्तर : हाँ जरूरी है जैसे सूर्य निकलना जरूरी है वैसे दीपक जलाना भी जरूरी है।

प्रश्न : क्यों जरूरी है?

उत्तर : सूर्य को जानने के लिए।

प्रश्न : क्या सूर्य को जानना आवश्यक है?

उत्तर : हाँ सूर्य को जानना बहुत आवश्यक है क्योंकि सूर्य तो जगत् की आत्मा है। सूर्य है तो जगत् है और यदि सूर्य नहीं तो जगत् भी नहीं। सूर्य तो जीवन है।

प्रश्न : सूर्य को कैसे जानेंगे?

उत्तर : दीपक से जानेंगे। दीपक सूर्य का एक छोटा सा प्रतीक है परन्तु महत्त्वपूर्ण अर्थ समेटे हुए है। मानो दीपक छोटा सूर्य है। सूर्य जो काम बड़े स्तर पर करता है, दीपक वही छोटे स्तर पर करता है। सूर्य कैसे काम करता है इसको भी दीपक से जान सकते हैं दोनों की समानता देखें। दोनों प्रकाश देते हैं। दोनों अपना भोजन नीचे से ग्रहण करते हैं। बीच में दोनों खाली हैं। इसको इस प्रकार भी समझ सकते हैं सूर्य का प्रकाश तीसरे लोक में होता है जिसे द्युलोक कहते हैं। उससे नीचे के भाग को अन्तरिक्ष लोक कहते हैं और सबसे नीचे के भाग को पृथ्वी लोक कहते हैं। ठीक इसी प्रकार दीपक भी है। दीपक का प्रकाश भी ऊपर के भाग में होता हैं। उसे भी द्युलोक कहते हैं। उसके नीचे का भाग खाली दिखायी देता है जिसे अन्तरिक्ष कह सकते है क्योंकि घी इसी के द्वारा ऊपर पहुँचता है। सबसे नीचे पृथ्वी लोक है जहाँ पर घी रखा हुआ है।

प्रश्न : यह तो पता चल गया कि सूर्य और दीपक लगभग एक ही प्रकार से काम करते हैं तीनों में तीन लोक भी हैं परन्तु इसका यज्ञ करने वाले से क्या सम्बन्ध है?

उत्तर : सम्बन्ध है और बहुत गहरा सम्बन्ध है।

thearyasamaj.org

यही समझाना तो इसका उद्देश्य है कि वह अपने आप को समझे क्योंकि उसके अन्दर भी तीन लोक हैं। **जहाँ मस्तिष्क रखा हुआ है उसे द्युलोक कहते हैं।** ठीक वैसे ही जैसे द्युलोक में सूर्य स्थित है और दीपक में प्रकाश। इससे नीचे अन्तरिक्ष है और सबसे नीचे, पृथ्वी लोक है। इससे **पता चलता है कि सूर्य, दीपक, और मनुष्य तीनों का एक ही काम है प्रकाश देना।** यहाँ मनुष्य अपने को सूर्य के समान बनाने का संकल्प लेता है- "मैं सूर्य के समान हो गया हूँ।"

प्रश्न : दीपक तो कहीं भी जलाया जा सकता है फिर वेदी के पास ही क्यों?

उत्तर : इसी रहस्य को तो समझना है। हम भी यह समझना चाहते हैं कि वेदी के पास ही क्यों जलाया जाता है? दीपक जलाना तो एक शुरूआत है अभी तो पूरा हवन करना है परन्तु विचारपूर्वक करना है। जैसे ही व्यक्ति "**ओं भूवः स्वः**" बोलता है और दीपक जलाता है तो उसे यह जानने की उत्कट इच्छा पैदा होती है कि **मेरे अन्दर तीन लोकों का क्या महत्त्व है? इसे मैं कैसे समझूँ?**

ऋषियों ने इसको समझाया है। हमारे सोलह संस्कारों में एक संस्कार जातकर्म संस्कार है। जब बच्चा इस संसार में पदार्पण करता है तो यह संस्कार किया जाता है। उसी समय पिता बच्चे को गोद में लेकर अशीर्वाद स्वरूप कुछ मन्त्र बोलता है-

ओं भूस्त्वयि दधामि।
ओं भुवस्त्वयि दधामि।
ओं स्वस्त्वयि दधामि।
ओं भूर्भुवः स्वस्सर्वं त्वयि दधामि।

पिता कहता है कि हे बच्चे! मैं तुम्हें भूलोक (पृथ्वी लोक) का स्वामी बनाना चाहता हूँ। भुव लोक (अन्तरिक्ष लोक) का स्वामी बनाना चाहता हूँ। स्व लोक (द्युलोक का स्वामी बनाना चाहता हूँ **इन लोकों में जो कुछ भी है वह सब कुछ तुम्हें देना चाहता हूँ।** वाह! क्या बात है? इससे बढ़कर आत्मविश्वास और क्या हो सकता है? **अरे भाई! जब पिता को जानकारी होगी तभी तो बच्चे को देगा। बस यह जानकारी हासिल करने के लिए ही तो यह दीपक जला रहा है** और वह भी वेदी के पास। यह समझना जरूरी है।

प्रश्न : तीन लोक-तीन लोक बहुत देर से कहे जा रहे हों, क्या हैं ये तीन लोक?

उत्तर : बहुत महत्त्वपूर्ण हैं ये तीन लोक। हमने पहले ही बता दिया कि ये तीन लोक दीपक की भांति हैं-

1. पृथ्वी लोक- इसे भूलोक भी कहा गया है। भू पृथ्वी को कहते हैं। इस पृथ्वी लोक में- पैर, मूत्रेन्द्रिय, उपस्थेन्द्रिय (गुदा) है। इन विषय में जानकारी देना और भटकने से बचाना ही भू

thearyasamaj.org

लोक की जानकारी देना है। आज बच्चे इस लोक की जानकारी के अभाव में क्या-क्या हानि नहीं झेल रहे हैं? समाज की क्या-क्या हानि नहीं कर रहे हैं? अधिकतर बच्चे यह नहीं जानते कि शौच जाने के पश्चात् कौन से हाथ से साफ करें? मूत्रेन्द्रिय का उपयोग क्या है? इसका काम क्या है? इसकी सफाई व सुरक्षा कैसे करें? धातु क्या है? इसका निर्माण कैसे होता है? इसका उपयोग कहाँ होता है? इसकी रक्षा में आनन्द और नाश में हानि है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में **और वीर्य की रक्षा में आनन्द और नाश करने में दुःख प्राप्ति भी जान ले चाहिए। जैसे देखो! जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण की यही रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण एवं स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होना। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक महाकुलक्षणी और जिसको प्रमेह रोग होता है वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है। जो तुम सुशिक्षा, विद्या के ग्रहण और वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा।**

विवाह करने से पहले भी युवकों को इसकी सही जानकारी नहीं मिल पाती है। जिसके कारण वे सारी उम्र सुखपूर्वक नहीं हो पाती है। इस सबकी जानकारी देने की जिम्मेवारी पिता अपने ऊपर लेता है। **यह शिक्षा घर में ही दी जायेगी, विद्यालयों में नहीं।**

2. अन्तरिक्ष लोक- इस लोक को भुवः लोक कहा गया है। इसके अन्तर्गत लीवर, किडनी, आंतें, फेफड़ें, हृदय आदि आते हैं। सारे महत्त्वपूर्ण अंग हैं। आज कम उम्र में ही बच्चों के ये अंग विकृत होने लगे हैं। इसका असर पृथ्वी लोक और द्युलोक दोनों पर ही पड़ता है। जबकि इन दोनों लोकों को अच्छा बनाने की प्रार्थना अगले मन्त्र में की गयी है। इसलिए इनको स्वस्थ रखना भी पिता अपने बच्चों को सिखाने का संकल्प लेता है।

3. द्युलोक- स्वः लोक के नाम से ही इसको जाना जाता है। इस लोक में मुख नासिका, आँख, कान और मस्तिष्क सब महत्त्वपूर्ण देवता निवास करते हैं। इन सबका उपयोग कैसे किया जाता है? कैसे इनको स्वस्थ रखा जाता है? दुरुपयोग से कैसे बचें? जैसे सूर्य अपने अधिक

thearyasamaj.org

प्रकाश व दीपक अपने थोड़े से प्रकाश से संसार को प्रकाशित करते हैं वैसे ही हम व हमारे बच्चे अपने मस्तिष्क रूपी सूर्य से संसार के लोगों को कैसे प्रकाशित (प्रकाश वाले) करेंगे? यही है वेदी के पास दीपक जलाना।

प्रश्न : वेदी के विषय में कुछ और बताना चाहेंगे?

उत्तर : हाँ! अभी एक बात बताना और आवश्यक है। जब यजमान वेदी के समीप बैठा होता है तो उसे पूरा ब्रह्माण्ड का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। पहली मेखला भू लोक दूसरी भुवः लोक और तीसरी स्वः लोक के दर्शन कराती है। क्रमशः पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक। यहाँ भी तीन लोक हैं। इन तीन लोकों का सम्बन्ध हमारे शरीर में स्थित तीन लोकों से भी है। शास्त्रों में कहा गया है कि **जो पिण्ड में है वह ब्रह्माण्ड में है** और यह भी कहा गया है कि **यह वेदी ब्रह्माण्ड की नाभि** है। यदि शरीर की नाभि ठीक होती है तो सारा शरीर ठीक होता है। नाभि हिल गयी तो शरीर के तीनों लोक भी अपना काम करना छोड़ देंगे। ठीक इसी प्रकार यदि ब्रह्माण्ड की नाभि हिल गयी तो तीनों लोक पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक की स्थिति भी बिगड़ जायेगी। इसलिए इनका सदुपयोग होता रहे। वेदी का सही उपयोग समझकर, दीपक जलाकर उसमें अग्नि की स्थापना की जाये और यह संकल्प किया जाये कि मुझे पृथ्वी से अन्तरिक्ष की ओर और अन्तरिक्ष से द्युलोक की ओर जाना है। विधि अगले मन्त्रों में समझायी जायेगी।

दीपक के जलाने से लाभ

1. अपने शरीर की जानकारी तथा अपने कर्त्तव्यों की समझ।

2. ब्रह्माण्ड की समझ।

3. दीपक, मनुष्य और ब्रह्माण्ड तीनों में समानता की जानकारी।

शेष अगले अंक में

जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।

जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ सुख के लिये दे रखे हैं उसके गुण भूल जाना ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 7

thearyasamaj.org

हैदराबाद के जननायक हुतात्मा भाई श्री श्यामलालजी

(हैदराबाद आन्दोलन स्मृति शेष)

लेखक- राजेन्द्र जिज्ञासु

आधुनिक भारत के इतिहास में जन जागृति, नागरिक, अधिकारों व धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए भाई श्री श्यामलालजी का बलिदान स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। वे एक आदर्श आर्यपुरुष थे। निडरता की मूर्त्ति थे। सत्यवादी, अटल ईश्वर विश्वासी, न्याय-प्रिय, परोपकारी, सच्चे धर्मात्मा व महात्मा थे। आर्यसमाज के लौहपुरुष, इतिहासवेत्ता श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने लिखा है, वे धर्म-प्रचार के मूर्त्तिमान आदर्श थे।

आपका जन्म सन् 1903 में भालकी नाम के एक छोटे से कस्बा में पं० श्री भोलाप्रसादजी के घर में हुआ था। भालकी ज़िला बीदर के अन्तर्गत है और अब यह जनपद कर्नाटक राज्य में है। श्री भोला प्रसाद जी को भोलानाथ भी कहा जाता था। आपकी माता का नाम श्रीमति छट्टोबाई था। भोलाप्रसादजी के पाँच सन्तानें थीं। तीन पुत्रियाँ व दो पुत्र थे। दो पुत्रियों का तो निधन हो गया। शेष तीन सन्तानों में श्याम भाई सबसे छोटे थे। बड़े भाई श्री पं० वंशीलाल जी वकील के नाम-नामी से सम्पूर्ण आर्यजगत् व निज़ाम राज्य की सारी प्रजा परिचित थी। इन दोनों भाईयों की चर्चा के बिना निजाम राज्य में जन जागृति व स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास अधूरा ही रह जाता है।

पं० श्री भोला प्रसाद पक्के पौराणिक ब्राह्मण थे। शैवमत अनुयायी थे। अल्प शिक्षित थे। उन्हें हिन्दी व मराठी का सामान्य-सा ज्ञान था। बहुत निर्धन परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि के सज्जन पुरुष थे। परिवार के पालन के लिए उन्हें अनेक स्थानों पर आजीविका उपार्जन के लिए भटकना पड़ा। घर पर वह बहुत कम रहे। कुछ समय के लिए आप मणिकनगर के प्रसिद्ध तीर्थ में भी सपरिवार रहे। यहाँ थोड़े समय के लिए आपने नौकरी की थी। माणिक प्रभु पर भोलाप्रसादजी की बड़ी श्रद्धा थी।

एक बार आप घर से बाहर कहीं गये हुए थे। पीछे घर में आग लग गई। ग्रीष्म ऋतु में आँधी भी आग की सहायक बन गई। कई परिवारों की आग लगने से क्षति हुई। श्रीमती छट्टोबाई ने अपने अद्भुत बुद्धि कौशल, चातुर्य व साहस का परिचय देते हुए सारे परिवार को बचा लिया। घर में जो थोड़ा बहुत सामान था, वह तो राख हो ही गया।

श्यामलालजी के पिता तो बच्चों को अनाथ छोड़कर चल बसे। आपकी तपस्विनी

thearyasamaj.org

माता ने बड़ी सूझ-बूझ से अपनी सन्तानो का निर्माण किया। श्यामभाई का शरीर बाल्यकाल से निर्बल व रोगग्रस्त था। आपको कुष्ट-रोग हो गया। दूरदर्शी धर्मात्मा माता ने ही आपको यह सीख दी कि विवाह करके एक पराइ कन्या का जीवन नष्ट करने की अपेक्षा उत्तम यही है इस नर-तन को देश-जाति की सेवा में लगा दो।

मौत को कई बार पछाड़ा- श्री श्यामलाल जी बाल्यकाल से ही मौत से जूझते रहे। कई बार मृत्युशज्या पर ऐसे पड़े कि बचने की कतई कोई आस नहीं, परन्तु यह महाप्रतापी पुण्यात्मा अपने पूर्वजन्म के किन्हीं संस्कारों के कारण, अपने अदम्य मनोबल व माता की सेवा सुश्रूषा से हर बार मौत को पछाड़ने में सफल रहे। मृत्यु का मान-मर्दन करनेवाले इस रुग्ण रहनेवाले बालक ने आगे चलकर अपने शौर्य व अथक सेवा से जाति में नवजीवन का सञ्चार किया। अनेक युवकों ने आपसे प्रेरणा प्राप्त करके अपना जीवन सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारब्ध से इस बलिदानी आत्मा को शारीरिक कष्ट तो पग-पग पर सहन करने पड़े परन्तु अपने किन्हीं पूर्वजन्म के संस्कारों व इस जन्म के भव्य भावों के कारण आप बलिदान पथ के पथिक बन गये। आपके कष्टों की व कष्ट सहने की कहानी किसी भी चमत्कार से अधिक रोचक है। आप दसवें वर्ष में थे जब आपको एक पागल कुत्ते ने काट खाया। आपके दक्षिण हाथ पर उसके काटने के दाँत के इक्कीस घाव लगे थे। इतना छोटा बच्चा इतना घायल होकर भी बच गया। यह बड़े अचम्भे की बात है। आपको बचने की किसी को भी आशा नहीं थी, उन दिनों पागल कुत्ते के काटने का इलाज भी तो एक समस्या था। टीके का आविष्कार ही नहीं हुआ था।

आरम्भिक शिक्षा- आपकी आरम्भिक शिक्षा भालकी में ही हुई। तब भालकी में प्राइमरी का सरकारी उर्दू स्कूल था। मराठी व हिन्दी को पढ़ाई की निज़ाम राज्य में कोई सुविधा ही नहीं थी। मराठी व हिन्दी की शिक्षा तो घरों में ही सम्भव थी। आपने मराठी व उर्दू की शिक्षा ग्रहण की। भालकी में पढ़ाई समाप्त करके उदगीर में अपनी बड़ी बहिन के पास आ गये। उदगीर अब तो महाराष्ट्र में है। तब उदगीर भी बीदर जिले का ही एक तालुका था। आगे चलकर भाई श्यामलालजी के पुरुषार्थ व लग्न के कारण उदगीर निज़ाम राज्य के आर्यसमाज का मुख्य केन्द्र बन गया।

आर्यसमाजी कैसे बने?- आपके एक मामा श्री गोकुलप्रसाद वैदिक धर्मी बन गये। वह आर्यसमाज के एक उत्साही कार्यकर्त्ता थे। उन्हें आर्यसमाज के प्रचार की धुन लगी रहती थी।

thearyasamaj.org
गोकुलप्रसादजी ने अपने बड़े भांजे पं० वंशीलाल को आर्यसमाज के रंग में रंग दिया। श्यामलाल अपने पैतृक संस्कारों व ग्राम के वातावरण के कारण पक्के शिव भक्त थे। ग्राम के सब देवी-देवताओं के वह नित्य दर्शन किया करते थे। हनुमानजी व श्री माणिक प्रभुजी के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी।

श्री गोकूल प्रसाद ने इस प्रतिभा-सम्पन्न भक्त-प्रकृति के छोटे भाञ्जे को भी आर्यसमाजी बनाने के लए हर सम्भव प्रयास किया। अब दोनों भाइयों में धार्मिक विषयों विशेष रूप से मूर्ति-पूजा पर वाद विवाद होता रहता था। दोनों भाइयों में धार्मिक विषयों पर वाद विवाद, लड़ाई झगड़ा व मार कुटाई भी होती रहती थी। ज्येष्ठ भ्राता ने छोटे भाई को आर्य बनाने का यत्न जारी रखा। श्यामलाल लगभग 13 वर्ष के होंगे जब माता व भाई की कृपा से आप भी वैदिक धर्म की ओर प्रवृत हो गये।

पिता की मृत्यु और जीवन संघर्ष- आपकी आयु 13 वर्ष की होगी जब आपके पिता श्री भोला प्रसाद जी का निधन हो गया। परिवार साधन सम्पन्न तो पहले से ही नहीं था। अभावों की चक्की में ही कुटुम्ब पिसता रहा। अब तो पिता की छत्रछाया उठ जाने से और भी समस्यायें पैदा हो गई। श्री भोला प्रसाद जी एक जागीरदार के पास नौकरी करते थे। इस जागीरदार के सहयोग से दोनों भाई अपनी शिक्षा पूरी कर सके। वंशीलालजी तो हैदराबाद में पढ़ते थे और श्यामलाल उदगीर में पढ़ते रहे। तब हैदराबाद में आठवीं तक उर्दू-शिक्षा प्राप्त करके कोई भी वकालत पढ़कर वकील बन सकता था। दोनों भाइयों ने आगे पीछे वकालत पास कर ली।

परिवार पर एक और विपत्ति- श्री श्यामलाल के पिताजी के निधन के पश्चात् आपके मामा गोकुल प्रसाद जी ने आपकी छोटी बहिन को व आपकी माता जी को अपने पास रख लिया। दुर्भाग्य से अगले ही वर्ष सन् 1917 में गोकुल प्रसाद जी भी चल बसे। आपके दो और मामा थे। एक माणिक प्रसाद जी और श्रीयुत् दत्तात्रेयप्रसाद जी वकील। अब आप दोनों ने अपनी दुःखिया बहिन के परिवार की यथासम्भव सहायता व देखभाल की। श्यामलालजी ने श्री दत्तात्रेय प्रसाद की सहायता से ही मिडल परीक्षा पास की।

यहाँ प्रसंगवश श्री दत्तात्रेय प्रसाद जी के सम्बन्ध में यह बता दें कि आप आजीवन अविवाहित रहे। बड़े निडर आर्यनेता थे। गुलबर्गा को अपनी सेवाओं का केन्द्र बनाकर आपने विस्मरणीय समाज सेवा की। निज़ाम राज्य की पीड़ित प्रजा की रक्षा के लिए सदा

thearyasamaj.org

संघर्षरत रहे।

बाल्यकाल की कुछ घटनायें- श्याम लाल जी के पिता जिस जागीरदार के पास नौकरी करते थे उसने एक बार अपने एक कार्यक्रम में एक वेश्या का नाच करवाया। श्याम जाल जी को पिताजी साथ ले गये। बेटे के हाथ में दो रुपये देकर कहा कि वेश्या को पुरस्कार स्वरूप दे दो। बालक भरी सभा में वह रुपये फेंककर वहाँ से चला आया। भले ही दर्शक वेश्या के नाच के लिए ही एकत्र थे, परन्तु उन सब पर बालक के इस व्यवहार का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने लिखा है कि बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में उदगीर का वातावरण बड़ा दूषित था। वहाँ कई प्रकार की सामाजक बुराइयाँ थीं। कोई भी व्यक्ति वहाँ झूठ, चोरी, ठगी व व्यभिचार आदि दोषों से कम ही बच पाता था। लोग इन्हें पाप ही नहीं मानते थे। कुछ समय के लिए तो श्यामलाल भी कुसंग के कारण ऐसे दूषित वातावरण में अपयश के भागी बने, परन्तु शीघ्र ही वह अपने बाल्यकाल के अच्छे संस्कारों के प्रबल होने से और कुछ आर्यसमाज की विचारधारा के प्रभाव से इस कीच बीच में से निकल आये।

जीवन-निर्माण केन्द्र- जब उद्गीर को केन्द्र बनाकर आपने वैदिक धर्म-प्रचार का अभियान चलाया तब नगर व आस-पास के अनेक नवयुवक व कुमार रात्रि आर्यसमाज मन्दिर में ही आकर सोते थे। सोने से पूर्व धर्मचर्चा, वादविवाद, शंका समाधान, व्याख्यान प्रवचन आदि होते थे। सन्ध्या, स्वाध्याय के व्रत का कड़ाई से पालन किया जाता था। प्रातःकाल समाज मन्दिर में सब व्यायाम किया करते थे। तब आर्य समाज उदगीर का मन्दिर एक ज्योति केन्द्र था, एक गुरुकुल था, एक जीवन-निर्माणशाला था, क्रांन्तिवीरों का एक पालना था। भाई श्यामलालजी ही इस सारे कार्यक्रम के सञ्चालक व प्रेरणास्त्रोत थे। भाईजी की इस जीवन-निर्माणशाला से प्रशिक्षित दीक्षित वीरों ने निज़ाम राज्य को कम्पा दिया, हिला दिया। इनमें से अनेक ने बार-बार जेल यात्रा की। कई एक की जवानियाँ जेलों में गल गईं और ढल गईं यह एक बहुत लम्बी कहानी है। अब तो उदगीर का समाज मन्दिर एक निर्जीव स्कूल भवन है और बस। आर्यसमाज के वर्तमान अधिकारी आर्यसमाज को सुदृढ़ व सक्रिय करने में कुछ रुचि लेने लगे हैं। देखें वे कुछ कर पाते हैं अथवा बातें.........

वैदिक धर्म से प्यार का मूल्य चुकाया

श्यामलालजी को जाति की कुरीतियों व सामाजिक रोगों का ज्ञान हो चुका था। 1921

thearyasamaj.org

में आपने प्रथम बार सामाजिक कुरीतियों पर भाषण दिया। अब दोनों भाई हाल्लीखेड़ में अपने बड़े मामा के पास रहते थे। उनकी भूमि की देखभाल करते थे। दोनों ने मिलकर वैदिक रीति से विजयादशमी का पर्व मनाया। श्यामलालजी ने इस पर्व पर एक प्रभावशाली प्रेरणाप्रद व्याख्यान भी दिया। श्री माणिकप्रसाद बड़े कट्टर पौराणिक थे। **पौराणिकों की एक विशेषता है कि ये लोग इस्लाम का, ईसाई मत का व घोर नास्तिक पन्थों का प्रचार तो सुन सकते हैं। सहन भी करते हैं, परन्तु ऋषि दयानन्द की विचारधारा को ये लोग कदापि सहन नहीं कर सकते ।**

श्री माणिकप्रसाद जी ने वंशीलालजी से ऐसा वाद विवाद किया कि वंशीलाल हल्लीखेड़ छोड़कर कहीं अन्यत्र चले गये। श्यामलाल भी कल्याणी चले गये। वहाँ कुछ समय सक्रिय समाज सेवा की। फिर दोनों भाई हल्लीखेड़ आ गये। दोनों ने मिलकर एक हिन्दी पाठशाला भी चलाई। श्यामलालजी के हल्लीखेड़ छोड़ने पर अकेले बंशी भाई इसे न चला सके।

वे कैसे सिद्धान्तनिष्ठ थे!

पहले बताया जा चुका है कि इनकी एक बहिन अभी अविवाहित थी। उसका विवाह निश्चित हुआ। वर आर्यसमाजी तो था, परन्तु विवाह संस्कार वैदिक रीत्यानुसार नहीं हुआ। दोनों भाई सगी बहिन के विवाह समारोह से इसी कारण अलग-थलग रहे। ऐसे सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्तियों को लोग भले ही कुछ भी कहें, परन्तु युग की धारा को ऐसे ही लोग बदला करते हैं। जो सुविधा पर सिद्धान्तों को वार देते हैं वे लोग कुरीतियों के प्रवाह को न तो रोक पाते हैं और न ही परिस्थितियों के प्रवाह को चीरकर पार उतर सकते हैं।

गुलबर्गा में ज्योति जगाई

श्री वंशीलाल वकील बनकर कार्यक्षेत्र में डट गये। श्री श्यामलाल गुलबर्गा में छोटे मामा के पास वकालत की तैयारी करने लगे। आपने ही गुलबर्गा में आर्यसमाज की स्थापना की। स्वयं इस समाज के मन्त्री बने और श्रीयुत् टी० धनुष्कोटि समाज के प्रधान चुने गये। आर्यसमाज गुलबर्गा की स्थापना कर आर्यसमाज गुलबर्गा को श्यामलालजी ने कई रत्न दिये। गुलबर्गा के आर्यवीरों ने हिन्दू जाति की रक्षा के लिए अबलाओं के सतीत्व की रक्षा के लिए, दलितोद्धार व अनाथों के रक्षण-पोषण के लिए जो कार्य किये हें, वे गिनाए नहीं जा सकते । श्यामलालजी का शरीर भले ही सदैव रोगग्रस्त रहता था, परन्तु वे चुम्बकीय व्यक्तित्व के जननायक थे। युवकों को खींचने व उनका निर्माणकरने की कला में वे सिद्धहस्त थे।

thearyasamaj.org

गुलबर्गा में आपने अनेक युवकों को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर समाज सेवा के लिए प्रेरित किया।

एक बार गुलबर्गा में अचेत होकर गिर गये। उठने की आशा ही नहीं थी, परन्तु इस बार भी आप मृत्यु के जबड़ों से बच निकले। 1925 ई० में आपने वकालत की परीक्षा पास कर ली। आपने किन्हीं कारणों से गुलबर्गा छोड़कर उदगीर को अपना केन्द्र बनाकर कार्य आरम्भ कर दिया। उदगीर में वकालत करते हुए दिन-रात समाज सेवा में संलग्न रहते थे। सारे निज़ाम राज्य में प्रचारार्थ भ्रमण करते थे। तब न तो सड़कें थीं और न आने जाने के साधन थे तथापि आप सदा भ्रमण करते रहते थे। दु:खियों के दु:ख निवारण के लिए सदा तत्पर रहते थे।

निज़ाम उस्मान अली ने राज्य से बाहर के मुसलमानों को प्रलोभन देकर उन्हें राज्य में बसाया। हुमनाबाद व उसके आसपास भी बाहर से लोकर बसाये गये पठानों की एक अच्छी संख्या थी। भाई श्यामलाल जी के पुरुषार्थ से हुनाबाद में आर्यसमाज की स्थापना हो गई। महर्षि के जन्म शताब्दी वर्ष पर वहाँ ऋषिबोध पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। निज़ाम स्टेट में आर्यसमाज होली व विजयादशमी के पर्व बड़े निराले ढंग से मनाता रहा है। हुमनाबाद में होली पर जब प्रथम बार आर्यों ने होली का नगर कीर्तन निकाला तो धर्म-प्रमी जनता इसे देखकर बहुत प्रभावित हुई।

सन् 1925 में ही भाईजी को चर्म-रोग सताने लगा। अच्छे-अच्छे वैद्यों से इसका उपचार करवाया गया। खान-पान में आप बड़ी सावधानी बर्तते थे तथापि 1926 में रोग ने भयंकर रूप धारण कर लिया। उनके उपचार से आपको लाभ भी हुआ। कुछ समय लाहौर रहकर श्यामभाई उदगीर लौट गये। 1926 का वर्ष आपके जीवन में एक विशेष महत्व रखता है। इसी वर्ष आपने आर्यसमाज उदगीर की स्थापना कर दी।

वर्ष के अन्त में 23 दिसम्बर को शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान का भाई श्यामलाल को अपना आदर्श मानते थे। श्री भाईजी के एक शिष्य उदगीर निवासी श्री अशोक आर्य (शोलापुर वाले) ने कई बार मुझे बताया था कि एक बार हमने भाई जी से पूछा कि आपकी उत्कट इच्छा क्या है। आपने कहा, **"मेरी प्रबल इच्छा यह है कि मुझे मेरे महान् गुरु स्वामी श्रद्धानन्दजी वाली मौत ही प्राप्त हो।"**

ईश्वर ने उनके पवित्र हृदय से निकली उनकी यह प्रार्थना सुन ली। उनकी मनोकामना पूर्ण हुई। आपको भी धर्म की बलिवेदी पर जीवन भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

thearyasamaj.org

वे कितने निडर थे

आपके तपोनिष्ठ जीवन व कर्मण्यता से हिन्दू समाज ने एक अंगड़ाई ली। उनमें नवचेतना का संचार हुआ। मतांध शासक हिन्दु समाज में जागृति को सहन न कर सके। उगीर के तहसीलदार मुहम्मद जान ने स्थानीय मुसलमानों को उकसा कर भाईजी के घर पर रात के समय आक्रमण करवा दिया। मस्जिद भी आपके घर से कोई बहुत दूर नहीं। इस आक्रमण के समय 10-12 आर्य नवयुवक आपके घर आये हुए थे। वहाँ आर्यवीरों का आना-जाना लगा ही रहता था। वैदिक धर्म-प्रचार की सब योजनायें यहीं बनती थीं। 1964-1965 में आपके कई शिष्यों से मैंने इस आक्रमण के बारे में पूछा तो बताया गया कि आक्रमण के समय भाई जी अपने द्वार पर खड़े हो गये। सब आर्य युवकों को मकान की छत पर चले जाने को कहा। आक्रमणकारी भाई जी को मारने का शोर मचाते, नारे लगाते हुए मकान की ओर बढ़ रहे थे। निर्भीक वीर श्यामलाल अकम्प वहाँ खड़ा था आश्चर्य की बात है कि किसी को भी भाईजी पर वार करने का साहस न हुआ।

भाईजी के जीवन पर कई बार घातक आक्रमण हुए और कई बार हत्यारे उन्हें मारने की योजना बनाकर आये, परन्तु वे बिना किसी विशेष प्रयास के बच जाते रहे। डा० श्री डी० आर० दास जी ने आर्यसमाज धाराशिव के एक उत्सव पर रात्रि के अधिवेशन में मेरे पास बैठे हुए मुझे बताया था कि एक बार ऐसे ही वेदी पर यहीं पाण्डुरंग दरबार में (तब धाराशिव में आर्यमन्दिर नहीं था) भाई श्यामलाल मेरे पास बैठे हुए थे। पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज का भाषण हो रहा था। इतने में मुसलमान नारे लगाते हुए इस मन्दिर की ओर आ गये। उनके पास शस्त्र भी थे। वे लोग श्यामभाई को मारने के लिए शोर मचाते व नारे लगाते हुए यहाँ आ गये।

स्वामीजी ने उपस्थित श्रोताओं से कहा कि आप शान्ति से बैठे रहें। इन्हें भी देख लिया जायेगा। मैं अकेला ही इनसे निपट लूँगा, भाई श्यामलाल अपने स्थान पर यथापूर्व बैठे रहे। वे आक्रमणकारियों को देखकर किचिंत भी विचलित नहीं हुए। कुछ देर हुल्लड़ मचाकर वे मुसलमान चले गये। डा० डी० आर० दासजी ने कहा, हम यह देखकर दंग रह गये कि भाई श्यामलाल सब को दिखाई दे रहे थे फिर भी उस भीड़ मेंसे किसी को उन पर तलवार बर्छी व बन्दूक से वार करने का दुस्साहस न हुआ। किसी को उन पर पत्थर तक न मारा। भाईजी तो क्या सारा पण्डाल ही वहाँ असुरक्षित था। मन्दिर की चारदीवारी तो 1965-66 तक भी नहीं थी।

भाईजी पर प्रहार न करने के दो कारण

thearyasamaj.org

हो सकते हैं। लातूर आदि स्थानों से कई आर्यवीर उत्सव में आये हुए थे। दंगा करनेवाले समझ गये होंगे कि ये लोग हमारी उलटी धुनाई कर सकते हैं। भीमकाय संन्यासी स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के तेजस्वी मुखमण्डल को देखकर और उनकी सिंह गर्जना से शरारती तत्व भयभीत होकर चले गये।

आर्यसमाज ने जब प्रथम बार उदगीर में दशहरा पर शोभा यात्रा निकाली तब भी तहसीलदार ने कुछ झूठी रिपोर्ट करके इसे रोकना चाहा, परन्तु वह आर्यों के निश्चय को बदलने में विफल रहा। शोभायात्रा धूमधाम से निकाली गई। अब भाई जी आत्मरक्षा के लिए अपने पास शस्त्र रखने लगे। होली का पर्व आया। आप पर दो मुसलमान गुण्डों ने छुरे से आक्रमण कर दिया। आप एक बार फिर बच निकले। उसी अवसर पर एक दुष्ट ने बारूद जलाकर आपके हाथ पर एक घाव कर दिया। आपके विरुद्ध यह प्रचार कर दिया कि श्यामलाल ने मुझे रिवाल्वर से घायल कर दिया है।

अब पण्डित श्यामलाल मतांध शासकों की आँख में काँटा बनकर चुभने लगे। एक बार फिर भारी भीड़ ने उनके निवास पर रात्रि के समय धावा बोल दिया। भाईजी के निवास पर तब भी कई आर्यवीर कुछ विचार-विमर्श कर रहे थे। वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय के गगनभेदी जयकारों से आकाश गूञ्ज उठा। वीरों की हुंकार सुनकर सब आक्रमणकारी भाग खड़े हुए। सरकार को समय-समय पर लिखा गया, कहा गया और पत्र पत्रिकाओं में भी रोष प्रकट किया गया फिर भी निज़ामशाही ने किसी आक्रमणकारी को कभी भी दण्डित नहीं किया।

आप वेद-प्रचार, शिक्षा प्रसार व दलितोद्धार आदि कार्यों में लगे रहे। व्यायामशाला भी युवकों को खींच रही थी। कविराज हरनामदास आदि से कुछ अचूक औषधियों का ज्ञान प्राप्त करके आप रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा भी करते थे। उनके पास विशूचिका रोग की अचूक औषधि थी। वे रोकने पर भी रात के समय रोगियों को औषधि देने चले जाते थे। अपने लहू के प्यासे एक मुस्लिम आततायी को रोकने पर भी उसके घर पर जाकर औषधि देकर आये। वह भाई जी का भक्त बन गया।

उन्हीं दिनों की एक घटना से भाईजी की कार्यशैली का पता चलता है। होली पर आर्यसमाज ने शोभायात्रा निकाली। गंदगी व रंग फेंकने की बजाय आर्यलोग प्रभु-भक्ति, देश-भक्ति व समाज-सुधार के भजन गाते हुए गलियों में से निकल रहे थे। एक नटखट बच्चे

thearyasamaj.org
ने अपने घर की छत से आर्यों पर पिचकारी से रंग फेंका। सबके कपड़े खराब हो गये। भाई श्यामलाल शोभायात्रा का नेतृत्व कर रहे थे। आपने सबको शान्त रहने व आगे बढ;ने का निर्देश दिया।

अगले दिन अपने एक शिष्य को कहा पता लगाओं कि उस घर में रंग फेंकनेवाला बालक किस आयु का है? उसकी रुचियाँ क्या हैं? उस शिष्य ने पता करके बताया कि उस बालक का नाम अशोक है। उसे पुस्तकों की जिल्दें बाँधना बड़ा अच्छा लगता है। भाईजों ने श्री यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी की पुस्तक गुरु गोविन्द सिंह के पुत्रों का बलिदान उसके पास जिल्द बाँधने के लिये भिजवा दी और कहा जिल्द बाँधकर पैसे ले लेना।

बालक ने जिल्द बाँधने से पहले इसे पढ़ा। जिल्द बाँधकर देते समयकहा, "मुझे कोई ऐसी पुस्तक पढ़ने के लिए दें।" बस यही तो भाई श्यामलाल चाहते थे। तीर ठिकाने पर लगा। भाईजी ने उसे और कई जीवनियाँ पढ़ने को दीं। वह नटखट बालक भाई श्यामलाल जी का अनुचर बन गया। देश और समाज के लिये उसने भी कुछ किया। गुणियों के पारखी श्यामलाल ऐसे ही युवकों को, कुमारों को खीचते थे।

उस युग में अस्पृश्यता का भयानक भूत हिन्दू समाज को चिपटा हुआ था। भाईजी कुएँ पर जाकर चार-चार सौ घड़े पानी के खींच कर अपने दलित भाइयों को दिया करते थे। इस अथक सेवा व लग्न का यथोचित प्रभाव पड़ा। कई उत्साही युवक इस कार्य में आपके साथ जुड़ गये। आर्यसमाज का संगठन सुदृढ़ होता गया। भाई जी की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा से व आर्यसमाज की शंक्ति में वृद्धि होते देखकर सरकारी तन्त्र घबरा गया। आप पर एक के बाद दूसरा व दूसरे के बाद तीसरा अभियोग चलाया गया। आप कभी दण्डित हुए तो कभी निर्दोष सिद्ध होकर हाईकोर्ट से छूटे।

हिन्दू देवियों का अपहरण तो इस मतांध मुस्लिम राज्य में एक सामान्य-सी बात थी। एक बार एक दलित वर्ग की कन्या का अपहरण करके उसे आयशा नाम दिया गया। दु:खी परिवार की पुकार सुनकर आप आग में कूद पड़े और उस कन्या को बचाया। आप पर और आपके साथियों पर 'आयशा' के अपहरण का झूठा अभियोग चलाया गया। चरित्र के धनी, दुराचार व दुर्व्यसनो को जड़ से उखाड़नेवाले श्यामलालजी को वैदिक पथ पर चलते हुए किस-किस प्रकार की यातनायें सहनी पड़ीं, इसकी कल्पना करके शरीर सिहर उठता है।

दलितों व महिलाओं की माला फेरनेवाले राजनैतिक दलों ने एक दलित नारी के

thearyasamaj.org

मान व सतीत्व की रक्षा के लिए आग से खेलनेवाले श्यामलालजी को कभी स्मरण किया क्या? किसी भी दल के किसी भी नेता ने दलित नारी के लिए किसी अभियोग का सामना किया क्या?

1928 ई० में आर्यसमाज उदगीर के वार्षिकोत्सव पर कर्मवीर निर्भय मिशनरी श्रीयुत् पं० मंडलदेवजी आदि पधारे । पं० मंडलदेव जी का व्याख्यान हुआ। अभियोग भाई श्यामलाल पर चलाया गया। आपको दण्डित किया गया, परन्तु हाईकोर्ट ने आपको निर्दोष बताया। आपका वकालत का प्रमाण-पत्र भी जब्त करने के लिए एक अभियोग चलाया गया। भाईजी के लिये वकालत धनोपार्जन का साधन नहीं प्रत्युत जाति-रक्षा का एक हथियार था। पुलिस इसे भी छीनना चाहती थी। यह वार भी बेकार गया।

पण्डित श्री नरेन्द्रजी ने 'हैदराबाद में आर्यों की साधना व संघर्ष' पुस्तक में उस युग के आर्य प्रचारकों में सबसे पहले आप ही का नाम दिया है। आप प्राय: साईकल पर प्रचार यात्रायें किया करते थे। कन्नड़ भाषी क्षेत्र का कोई विरला ही नगर, कस्बा व ग्राम होगा जहाँ आप प्रचारार्थ न पहुँचे हों। निर्भय धर्म-रक्षक पर इन प्रचार यात्राओं में कई बार आक्रमण किये गये। कई बार कोई घर पर ठहराने को तैयार नहीं होता था। सड़कों पर रातें बिताकर इस धर्मोपदेशक जाति-सेवक ने वेद-प्रचार के आन्दोलन को आगे बढ़ाया।

जब ऊँटवाला भी भाग खड़ा हुआ

एक बार आप अंघोरी प्रचारार्थ जा रहे थे। किराये के एक ऊँट पर यात्रा कर रहे थे। एक और सहयोगी साथ था। कस्बा अहमदपुर के निकट सशस्त्र मुसलमानों ने आपको घेर लिया। वे लोग तो छाया के समान आपका पीछा किया करते थे। आप साहस करके ऊँट से नीचे उतर आये। अपना रिवाल्वर निकालकर उन्हें ललकारा। रिवाल्वर देखकर वे तो भागे ही, ऊँटवाला भी ऊद्दट लेकर भाग खड़ा हुआ तब भय के कारण अहमदपुर में कोई भी हिन्दू आपको अपने घर पर ठहराने को उद्यत न हुआ। प० लेखराम के इस मृत्युंजय सैनिक ने सारी रात रास्ते पर ही बिता दी। जाति आपका ऋण क्या चुका पायेगी?

भाईजी यदा-कदा पत्रों में लेख भी दिया करते थे। विद्याव्रत उपनाम से उर्दू हिन्दी पत्रो में आपके लेख प्रकाशित हुआ करते थे। आपने कुछ लघु पुस्तकों का मराठी अनुवाद करके उन्हें छपवाया। आपने पं० चमूपतिकृत **हमारे स्वामी** व एक अन्य पुस्तक **वर्ण व्यवस्था** का अनुवाद करके इन्हें प्रकाशित करवाया। निज़ाम राज्य में वैचारिक क्रान्ति के लिये बाहर के लेखकों की सेवाओं का लाभ

thearyasamaj.org

उठाने की उनको चाह रहती थी। लेखराम नगर (कादियाँ) निवासी श्रीयुत् पं० त्रिलोकचन्द्रजी शास्त्री कई भाषाओं के विद्वान्, सुवक्ता, कवि व सिद्धहस्त लेखक थे। वह समर्पित समाज-सेवी थे। भाई श्यामलाल चाहते थे कि हैदराबाद राज्य इस यशस्वी पत्रकार व विद्वान् को दक्षिण में ही बुलाकर, यहीं रखे।

हम रुकना झुकना क्या जानें

आर्यसमाज की संख्या बढ़ती जा रही थी। दोनों भाइयों ने इन्हें संगठन सूत्र में पिरोने के लिए राज्य की एक सभा बनाकर इन्हें संगठित करके आर्यों को एक नई दिशा दी। इस सभा के प्रधान पं० श्री वंशीलालजी तथा मन्त्री श्री श्यामलाल बनाये गए। चार अप्रैल सन् 1931 को आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद राज्य की स्थापना विधिवत् रूप से हो गई। श्यामभाई 1933 ई० में इस सभा के मन्त्री चुने गये। आपके रूप में एक तपस्वी, आग्रेय, गतिमान व कर्मठ नेता को पाकर राज्य का आर्यसमाज एक शक्तिशाली संगठन बन गया। अपने बेगाने सब इसकी शक्ति का लोहा मानते थे। हैदराबाद राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा ने अगले कुछ वर्षों में ऐसा रक्तरंजित इतिहास रचा जिस पर सम्पूर्ण आर्यजगत् अभिमान कर सकता है।

हम 1928 से 1938 की दशाब्दी को हैदराबाद के आर्यसमाज के इतिहास को 'श्यामलाल युग' कहेगे। इस काल में विरोधियों ने आर्यों के दलन व दमन के सब यत्न किये परन्तु-

भीड़ को चीरकर

उन्हीं दिनों कोहीर में होली के पर्व पर एक शुद्धि संस्कार छोड़कर चले गए। मुसलमानों ने कड़ा विरोध किया परन्तु निडरता की मूर्ति वीरवर भाई श्यामलालजी विरोधियों की भीड़ को चीर कर शोभा-यात्रा का नेतृत्व करते हुए निकल गये।

मौत फिर हाथ मलती रह गई

भाई श्यामलालजी प्रचारार्थ दबनी गये। आप घोड़े पर सवार थे। लौटते हुए वेगवती नदी में घोड़ा भी बहाव में बह गया। लगता था किआज श्यामभाई बच नहीं पायेंगे। तट पर कुछ मुसलमान यह दृश्य देखकर गद्‌गद हो रहे थे। बचाव के लिए वे लोग आनेवाले नहीं थे। श्यामभाई ने बहाव को चीरने का भरपूर प्रयास किया। ईश्वर की असीम कृपा से एक बार फिर श्यामलाल मौत के मुख से बचकर निकल आये। श्याम भाई द्वारा आज फिर मौत को पछाड़ देने पर हम महाकवि 'सरशार' की एक पंक्ति को कुछ बदलकर कहेंगे कि-

'मौत रो रो के हाथों को मलती रही।

माता का निधन

'वैदिक आदर्श' के 22 अगस्त सन्

thearyasamaj.org

1934 के अंक में एक समाचार छपा मिलता है कि 25 अगस्त सन् 1934 को भाई श्री श्यामलालजी की पूज्या माताजी का प्रात: चार बजे देहान्त हो गया। हल्लीखेड़ में उनका दाहकर्म संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। भाई श्री वंशीलालजी ने इस अवसर पर भाषण भी दिया। हल्लीखेड़ में प्रथम बार ही वैदिक रीति से यह दाहकर्म संस्कार किया गया। इसमें आधा मन घृत से आहुतियाँ दी गई थीं।

इस समाचार से ऐसा लगता है कि श्री श्यामभाई पूज्या माता के निधन के समय हल्लीखेड़ में नहीं थे। धर्मयोद्धा के पाँव में सदा चक्कर रहता था। कहीं प्रचार यात्रा पर होंगे नही पहुँच पाये। वहाँ होते तो संस्कार के समय उनके वहाँ पर होने का उल्लेख अवश्य होता। धन्य हैं ऐसी विभूतियाँ जो दिन-रात परोपकार में ही लगी रहती हैं। हाँ! इतनी बात तो अवश्य चकित कर देनेवाली है कि परिवारवालों ने भी दाहकर्म के लिए उनकी प्रतीक्षा नहीं की।

इस समाचार का एक और भी पहलु है। अपनी माता के निधन के समय श्री श्यामलालजी हैदराबाद सभा के मन्त्री थे। वैदिक आदर्श सभा का पत्र था। मन्त्री की माता के निधन के समाचार में उनका नाम तक नहीं दिया गया। यह उस काल के नेताओं की एक विशेषता थी। आज के युग में तो सभाओं के अधिकारी बड़े से बड़े विद्वान् की उपेक्षा करके अपना नाम व अपना चित्र सभा के पत्र में देकर चैन की नींद सा पाते हैं। जब तक सभाओं के अधिकारियों का प्रथम पृष्ठ पर नाम व कोई समाचार न छपे, इन्हें न तो भोजन पचता है और न ही ये लोग सो सकते हैं। यह युग विचारधारा के महत्त्व का नहीं व्यक्तिगत प्रचार व निजी हितों की प्रमुखता का युग है।

पं० रामचन्द्रजी देहलवी के व्याख्यान

आर्य समाज हल्लीखेड़ के वार्षिकोत्सव पर शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी को आमन्त्रित किया गया। उनके व्याख्यानों से प्रशासकों में खलबली मच गई। मतांध राज्य अधिकारी आर्य विचारधारा के प्रसार व प्रभाव को सहन नहीं कर सके। परिणाम स्वरूप श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी व भाई श्री वंशीलालजी व दो अन्य आर्यों पर अभियोग चलाया गया। इस ऐतिहासिक अभियोग का आर्यो ने साहस से सामना किया। इसी अभियोग व दमनकारी सत्याग्रह करना पड़ा। हल्लीखेड़ के अभियोग के समय भी श्याम भाई सभा के मन्त्री थे। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री सुधाकरजी ने हैदराबाद जाकर सरकार से बातचीत की। अभियोग तो उठा लिया गया परन्तु पूज्य देहलवीजी को राज्य से निकल जाने व बिना अनुमति राज्य में प्रवेश न करने का नया आदेश

thearyasamaj.org

दे दिया गया।

महर्षि बलिदान अर्ध शताब्दी, अजमेर

1933 में अजमेर में महर्षि दयानन्द की बलिदान अर्ध शताब्दी महोत्सव में श्यामलालजी भी अपने राज्य की सभा की ओर से सम्मिलित हुए। वे लौटकर उदगीर आये तो उन्हें नोटिस भेजा गया कि वे भविष्य में ऐसे किसी समारोह में भाग न लें। आपने उत्तर दिया कि मेरे गुरु की बलिदान अर्ध शताब्दी में भाग लेना मेरा कर्त्तव्य था। ऐसा करके मैंने कोई अपराध नहीं किया।

सार्वदेशिक सभा ने पग उठाया

पं० रामचन्द्रजी देहलवी के हल्लीखेड़ अभियोग की देशभर में धूम मच गई। आर्यसमाज निलंगा का मन्दिर ध्वस्त कर दिया गया। आर्यसमाजों के उत्सवों पर यहाँ वहाँ प्रतिबन्ध लगने लगे। राज्य स्तरीय आर्य महासम्मेलन करने की अनुमति न मिली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने महात्मा नारायण स्वामी व आचार्य रामदेव जी को राज्य का भ्रमण करके स्थिति की जाँच करने के लिये भेजा। आपने सारे राज्य में घूम-घूमकर पूरी जाँच-पड़ताल की और प्रचार भी किया।

इसी काल में दीनदारी सिद्दीकी ने हिन्दुओं के विरुद्ध बड़ा विषैला प्रचार आरम्भ कर रखा था। श्री श्यामलालजी इस घिनौने षड़यन्त्रकारी प्रचार का भाण्डा फोड़ने में सक्रिय रहे। इस व्यक्ति ने चन्न बस्वेश्वर सरवरे आलम नाम की अपनी कुख्यात पुस्तक में हिन्दूमात्र का दिल दुखाने का घृणित काम किया। आपके प्रयास व प्रचार ने हिन्दू जाति को हानि पहुँचानेवाले इस आन्दोलन का सफलतापूर्वक सामना किया। स्मरण रहे कि कोई दो वर्ष पूर्व आन्ध्र व कर्नाटक के कुछ ईसाई चर्चों में बम्ब-विस्फोट करके इसी संस्था ने देश के वातावरण को विषाक्त बना दिया और सारे संसार में हिन्दुओं को बदनाम करने के लिए पाकिस्तान के इस्लामी आतंकवादियों के संकेत पर ही चर्चों पर इन्हीं लोगों ने आक्रमण किये थे। आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् मास्टर श्री लक्ष्मणजी आर्योपदेशक ने तो 1934 में ही 'खंजरे ज़ालिम' पुस्तक लिखकर **'दिनदार सिद्दीकी'** के घिनौने रूप को देश वासियों के सामने रखकर इसकी अच्छी पोल खोली थी, परन्तु-

'रोग बढ़ता गया ज्यूँ दवा की।'

इस उक्ति के अनुसार निज़ाम की अन्यायी सरकार हिन्दू-प्रजा के उत्पीड़न व आर्यसमाज को कुचलने पर तुली हुई थी। आर्यसमाज चिटगोप्पा ने सन् 1934 में भाई वंशीलालजी को प्रचारार्थ आमन्त्रित किया। सरकारी तन्त्र ने प्रचार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। भाई वंशीलाल ने इस आज्ञा की धज्जियाँ उड़ाते

thearyasamaj.org

हुए अपने धार्मिक अधिकार का प्रयोग किया। वहाँ व्याख्यान दिया और चले आये। उनके पश्चात् श्यामभाई वहाँ गये। उनपर भी प्रतिबन्ध लगाया गया। साहसी वीर श्यामलाल ने लगातार छह दिन प्रचार करके इस पक्षपातपूर्ण राजकीय आज्ञा का उल्लंघन किया।

अगले वर्ष पुलिस ने उनपर दो अभियोग चलाये। वे इन दोनों में निर्दोष सिद्ध हुए।

रोग का भीषण आक्रमण

सन् 1935 में उदगीर की व्यायामशाला का उत्सव बड़े निराले ढंग से धूम-धाम से मनाया गया। सरकार ने उनके वारण्ट निकाल रखे थे। भाईजी लुकना-छुपना अच्छा नहीं मानते थे। आपने उत्सव में भाग लिया। व्यवस्था के लिये बड़ी भाग-दौड़ की। पुलिस ने भी उन्हें तब पकड़ने का साहस नहीं किया। जन आक्रोष का भय था। शरीर इतना श्रम करने के योग्य नहीं था। चर्म-रोग ने भयंकर रूप धारण कर लिया। आप उपचार के लिये पुनः उत्तर भारत आये। प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० श्री फुन्दनलालजी अग्निहोत्री बरेली के परामर्श से आप उत्तरकाशी की यात्रा पर गये। वहाँ स्वास्थ्य में पर्याप्त सुधार हुआ। आप कुछ समय के पश्चात् वापस उदगीर आकर धर्म-प्रचार में जुट गये।

माणिकनगर के मेले पर

श्री श्यामलालजी राज्य में मेलों पर वैदिक-धर्म के प्रचार के लिए जाते रहते थे। 1935 में माणिकनगर के प्रसिद्ध मेले पर आर्यसमाज ने प्रचार की व्यवस्था की। आर्यसमाज कानगर-कीर्तन देखकर राज्य के मतांध अधिकारी जल-भुन गये। शासन की प्रेरणा से असमाजिक तत्त्वों व जनूनी मुसलमानों ने आर्यसमाज के नगर कीर्तन पर आक्रमण कर दिया। श्यामभाई पर छुरे से वार किया गया। एक साहसी आर्यवीर श्री बाबूप्रसाद ने भाईजी की रक्षा की। श्यामलालजी तो बच गये, परन्तु उस युवक को बहुत गहरा घाव हो गया।

भाई वंशीलालजी इस कार्यक्रम में सम्मिलित न हो सके । वे हल्लीखेड़ में थे। पुलिस ने आर्यसमाज को न्याय क्या देना था। उपद्रवियों व आक्रमण करनेवालों को दण्डित करने का निज़ाम राज्य में कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। शान्ति व्यवस्था के नाम पर आर्यों पर केस बना दिया गया। भाई श्री श्यामलालजी, पं० नरेन्द्रजी, श्री दत्तात्रेयप्रसादजी व भाई वंशीलालजी को इस अभियोग में फँसाया गया। श्यामभाई व वंशी भाईजी को पचास रुपये जुर्माना का दण्ड सुना दिया गया। प्रजा के शोषक-शासक वर्ग से न्याय की आशा करना ही व्यर्थ था। पं० श्री नरेन्द्रजी ने लिखा है कि

thearyasamaj.org

श्यामलालजी, बाबूप्रसादजी व पण्डितजी तीनों ही मणिकनगर में घायल हो गये। वंशीभाई व श्यामभाई को कारागार का दण्ड भी दिया गया। ये यातनाऐं, यह उत्पीड़न, यह दमन नीति आर्यों का आगे बढ़ने से न रोक सकी। आर्यवीर इन यातनाओं को, नई-नई विपत्तियों को धर्म मार्ग पर व्यायाम तुलय मानकर इन्हें सहर्ष सहन करते रहे। स्वामी श्रद्धानन्दजी की उनके लिए यही सीख थी।

बलिवेदी की ओर बढ़ते पग

श्री श्यामभाई का स्वास्थ्य दिन-प्रति-दिन बिगड़ रहा था। इस पर भी उन्हें शरीर की चिन्ता नहीं थी। उन्हें धर्म-प्रचार व जाति-सेवा की धुन थी।

दिन-रात एक चिन्ता जाति सुधार की थी।

1936 में वे चिकित्सा के लिए मुम्बई गये। वहाँ सब दाँत निकलवाने पड़े। आँख का भी ऑपरेशन हुआ। वे केवल केले व दूध का सेवन करते थे। खान-पान पर उनका उद्‌भुत संयम था। मुम्बई में भी समाज सेवा में कभी प्रमाद नहीं किया।

इधर राज्य की परिस्थितियाँ बिगड़ रही थीं। आर्यसमाजियों पर अभियोग चलाना व हिन्दू प्रजा को सताना ही शासन का एक-सूत्री कार्यक्रम था। अब भाई वंशीलालजी सभा के मन्त्री थे। श्रीयुत् पं० विनायकरावजी सभा के प्रधान थे। हैदराबाद राजधानी में उनके निवास पर सहस्त्रों मुसलमानों ने जलूस निकालकर धावा बोल दिया। उस आक्रमण के समय पुलिस ने एक भी दंगई पर एक लाठी तक न चलाई विनायकरावजी के घर पर उस समय बस चार-पाँच व्यक्ति थे। उनके अबोध पुत्र को प्राण-रक्षा के लिए घर के सामान में छुपाना पड़ा अपूर्व साहस का परिचय देते हुए इस आक्रमण का सामना किया गया। यह भी एक चमत्कार ही जानिये कि दंगइयों को ही भागना पड़ा। गुलबर्गा के दंगे व हुपला के काण्ड व साड़ फूँक की सारे राज्य में चर्चा थी। देशभर के हिन्दूओं विशेषरूप से आर्यों में रोष बढ़ रहा था।

राज्य की पुलिस व मुसलमान अन्जमनों ने राज्य में एक विस्फोटक स्थिति पैदा कर दी। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आर्यसमाज के पास अब एक ही विकल्प बचा था कि वह अन्यायी सरकार से टक्कर ले। संघर्ष से लौटने के पश्चात् गुलबर्गा में रहते थे। 1937 का वर्ष आर्यों की कड़ी परीक्षा का समय था। उदगीर के आर्यों के विशेष अनुरोध पर श्यामलालजी वहाँ दशहरा के कार्यक्रम में भाग लेने गये। श्री वंशीलालजी देहली में सार्वदेशिक सभा की एक बैठक में भाग लेने गये हुए थे।

शासन ने विजयादशमी पर उदगीर में दंगा करवा दिया। श्री गंगाराम नाम के एक

thearyasamaj.org

लिंगायत द्वारा एक मुसलमान मारा गया। पुलिस को तो एक बहाना चाहिये था। श्यामभाई को पकड़कर बीदर जेल में डाल दिया गया। निज़ाम की जेलें धरती का नरककुण्ड ही तो थीं। शासन अब किसी भी मूल्य पर श्यामभाई को खुला छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। कवि की निम्न पंक्ति ऐसे प्राणवीरों पर ही चरितार्थ होती है-

'किस शेर की आमद (आना) है कि रण काँप रहा है।'

आर्यजाति के लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि उसके एक सपूत ने जो निरन्तर रोगी रहता था, हैदराबाद की साधन सम्पन्न शक्तिशाली सरकार को कम्पाकर रख दिया। एक कुष्ट-रोगी की तपस्या से भयभीत सरकार उसका जीवन समाप्त करने की मन में ठान चुकी थी। श्याम क्या था? वह वलवलों की आग और क्रान्ति का राग था।

श्री श्यामभाई चारों ओर से आपदाओं से घिरे रहते थे। बलायें उनके सिर पर मण्डराती रहती थीं। अभियोगो से कभी पीछा छूटा ही नही प्राणघातक वार प्रहार उनके लिए कोई नई बात नहीं थी **उदगीर की दीवारो पर उनकी हत्या करने की घोषणा की गई।** वे फिर भी न दबे और न डरे। वे ब्रह्मचारी थे तो भी सरकार उनसे, उनकी पत्नी व साली से भयभीत थी। तीनो पर पुलिस थाना में F.I.R. अंकित करवाई गई। यह पत्नी व साली कहाँ से पैदा हो गईं? यह तो सरकार ही जाने। मौत की धमकियों से वे डरनेवाले नहीं थे। वे जानते थे कि उनका शरीर तो एक दिन छूटेगा ही। वे रोग-शय्या पर नहीं वीर-शय्या पर मृत्यु का वरण करना चाहते थे। इसलिये वे तन-तानकर निर्भय होकर धर्म की बलिवेदी पर शीश चढ़ाने के लिए पग बढ़ाते रहे। महर्षि दयानन्द की अमरवाणी के निम्न शब्दों को वे अपने जीवन में उतारकर दिखला रहे थे-

''इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जावें, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।''

भाईजी के अमर बलिदान की घटना पर कुछ लिखने से पूर्व हम उनके अन्तिम दिनों में तत्काली पत्रों में प्रकाशित कुछ ऐतिहासिक लेखों के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश यहाँ देना आवश्यक समझते हैं। यही भाई जी का जीवन-दर्शन है। यही उनके जीवन के चिन्तन का निचोड़ हैं भाईजी के चरित्र का चित्र चित्रण करने के लिए इनका अवलोकन करना परमोपयोगी सिद्ध होगा। कभी साधन मिल गये तो हम इन लेखों को भाईजी के कुछ अन्य ऐसे लेखों के साथ अनूदित करके पृथक् पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित कर देंगे। अभी तो इनके

thearyasamaj.org

कुछ अत्यावश्यक अंश ही यहाँ दिये जाते हैं।

आर्यों की परीक्षा की घड़ी

अपने बलिदान से कुछ मास पूर्व 'आर्यवीर' उर्दू साप्ताहिक में प्रकाशित अपने एक लम्बे लेख में राज्य में हो रहे अत्याचारों का विस्तृत व्यौरा देते हुए आपने लिखा था, "इस प्रकार आज सैकड़ों अत्याचार ढाये जा रहे हैं, परन्तु आर्यसमाजी हैं कि इन्हें सहर्ष सहन करते हुए शान्तिपूर्वक अपना कार्य करते जा रहे हैं फिर भी आर्यों को बदनाम किया जाता है।

मैं इतना कुछ होने पर भी अपने राज्य हैदराबाद के आर्यों से प्रार्थना करता हूँ कि यह तुम्हारी परीक्षा की घड़ी है। अभी क्या पता कि आपको किन-किन संकटों का सामना करना पड़ेगा। ऐसी परीक्षा की बेला में आप इन संकटों की परवाह न करते हुए इस पद्य को सामने रखो-

सदाकत के लिए गर जान जाती है तो जाने दो।
विपत्ति पर विपत्ति सिर पै आती है तो आने दो॥

पाठक वृन्द! ऋषि ने आपके सन्मुख जीवन का आदर्श रखा है। अब यदि इससे लाभ नहीं उठाओगे तो मृत्यु का शिकार बनोगे। तुमने आर्यसमाज में आकर संसार के उद्धार का बीड़ा उठाया है, अतः आप निज विचारों को संसार में फैलाना चाहते हो संकटों की परवाह न करते हुए पहले स्वयं इनका पालन करो।"

सन् 1938 के ऋषि बोध पर्व पर **'महर्षि दयानन्द सरस्वती का तप'** लेख में आपने आर्यों से कहा, **"ये दुःख बिना तप के दूर नहीं हो सकते।"**

गुञ्जोटी के हुतात्मा वेदप्रकाश के बलिदान पर पूज्य भाईजी ने 'आर्यवीर' में अपने लेख में लिखा था-

"प्यारे आर्य युवको! यह ईश्वर का न्याय है। शाबाश आर्यवीर वेदप्रकाश! वैदिक-धर्म की बलिवेदी पर तू आज बलिदान हो गया। अपने पिता का नाम उज्जवल कर गया। माता की कोख को पवित्र बना गया। अपने समाज का मुख उज्जवल कर गया। बहादुर यार जंग की तब्लीग, पुलिस के षड्यन्त्र और बारम्बार निज़ाम सरकार का इधर ध्यान आकृष्ट करने पर भी इधर ध्यान न देना- आज तुझे बलिवेदी पर बलिदान किया गया। तू अपना कर्त्तव्य पालन कर गया। तू सौभाग्शाली था। एक दिन तुझे जाना ही था, परन्तु तू अपनी इस अल्प आयु में धर्म के लिए बलिदान हुआ। अहोभाग्य तेरे! धन्य तेरे माता पिता! धन्य तेरी जन्मभूमि! जा ! जा ! बड़े चाव से जा और आर्य परिवार की किसी वीरांगना के घर जन्म लेकर फिर आ! देखना तेरे आने तक हम भी कुछ

thearyasamaj.org

करते हैं कि नहीं।

आओ! आर्य वीरो आओ! मौत का भय तो 21 वर्षीय बालक दूर करके हमसे करते विदा होकर चला गया।''

लेख की समाप्ति पर भविष्यवाणी करते हुए निर्भीक सत्यवाणी वाले बलिदानी ने क्रूर कायर हत्यारे को सम्बोधित करते हुए लिखा, ''हमें तूने अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलने का अवसर देकर परीक्षा में बिठा दिया है।'' **''देख एक वर्ष में परिणाम क्या निकलेगा।''**

ठीक एक वर्ष के भीतर भाईजी ने अपना बलिदान दिया अपनी आहुति दे दी। आर्यसमाज के तेजस्वी प्रतापी नेताओं ने शोलापुर के आर्य महासम्मेलन में सत्याग्रह की घोषणा कर दी। इस बलिदान यज्ञ की ज्वाला में अन्यायी निजामी राज्य भस्मीभूत हो गया।

भाई श्यामलालजी के **'सीना बे कीना'** (निवैर निष्पाप हृदय) से निकले ये शब्द उस पवित्र आत्मा की कामना थी। पुण्यात्मा की यह मनोकामना ईश्वर ने अक्षरशः पूरी कर दी।

और वे जान वार गये

भाई श्यामलाल को कारागार में असह्य यातनायें दी गई। उनका रोगी तो जेलवालों के दुर्व्यवहार को सहन नहीं कर सकता था, परन्तु उनका बलवान् आत्मा सब कुछ शान्तिपूर्वक सहन करता रहा। बड़े भाई वंशीलाल शोलापुर मे थे। उनका राज्य में प्रवेश निषिद्ध था। वंशीलालजी ने राज्य के प्रधानमन्त्री सर अकबर हैदरी को पत्र लिखकर श्यामलालजी की रुग्णता के बारे पत्र लिखकर यह बताया कि उनका भोजन केवल दूध व फल है।

श्यामलालजी के मामा के बेटे श्री कृष्णदत्तजी उन्हें मिलने बीदर गये। तीन दिन की भाग-दौड़ के पश्चात् ही वह आपसे भेंट कर सके। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि श्यामलालजी के साथ जेल में कैस व्यवहार होता होगा। सरकार अपने ही पापों के कारण शंकित थी सो वह किसी को श्यामलालजी से क्यों मिलने देती?

श्री वंशीभाईजी के नाम अपने एक पत्र में श्यामलालजी ने जेल की आपबीती या दी जा रही यातनाओं का वर्णन किया। इसे पढ़कर हृदय काँप उठता हैं सरकार निर्दयी व क्रूी थी। जेल के अधिकारी लोग अत्यन्त योजनाबद्ध ढंग से आर्यजाति के इस लाल को शासन के लिए काल मानते हुए उन्हें मृत्यु के मुख में धकेल रहे थे।

जेल में बन्दी आर्यों से उन्हें पृथक् रखा गया। कोई भी उनसे संकेत से भी बात नहीं कर सकता था। जेल का भोजन न करने के लिए भी उन्हें धमकाया गया। उन्होंने कहा मेरी औषधि

thearyasamaj.org

तो न छुड़वायें। यह तो सेवन करने दें। दूध आप नहीं दे सकते तो मैं अपने स्वजनों से इसकी व्यवस्था करवा लूँगा। जेल में एक नया दरोगा भेजा गया। उसने भाईजी को रातभर द्वार के सामने सुलाया। यहाँ खुली हवा की मार से वे रातभर ठण्ड से अकड़ गये। बेंत मारने की धमकियाँ तो देते ही थे।

जेल का भोजन लेना ही पड़ेगा। ज्वार की दो रोटियाँ और मिर्च वाली दाल लेकर एक व्यक्ति उनके पास गया। साथ एक और धूर्त कर्मचारी हवा में बेंत लहराता हुआ आया। उन्हें जेल का भोजन प्रतिकूल था सो वे भूखे रहने पर विवश थे। उनको डॉक्अर ने स्वास्थ्य के कारण जूता पहनने की अनुमति दे रखी थी। जूता भी नहीं पहनने देंगे। जेल के अन्य आर्य बन्दियों ने भी उनके प्रति सहानुभूति के कारण भोजन नहीं किया। उन्हें भी यातनाओं का शिकार बनाया गया। एक पत्र गुप्तरूप से श्री विनायकरावजी को भेजकर ये सारे समाचार हैदराबाद भेजे गये। 16 दिसम्बर 1938 को इन परिस्थितियों में आपका बीदर जेल में बलिदन हो गया। अन्तिम वेला में उनके पास केवल एक आर्य बालक था। रात को सोते समय उन्हे दूध दिया गयां यह विषयुक्त था इसे लेते ही उनकी प्रकृति बिगड़ने लगी उन्होने प्राण त्यागने से पूर्व पत्र लिखा और उस आर्यवीर को देकर कहा, "इसे बाहर पहुँचवा दिया दूध देकर दरोगा जेल फिर 12 बजे आया। श्यामलाल मरा है या अभी जीवित है। यह जानना चाहता था। आवाज लगाई। उत्तर कौन देगा? वह बालक सोने का अभिनय करके लेटा रहा। द्वार खोलकर दरोगा भीतर आया। उस बालक को जगाया। पूछा, "मरने से पूर्व इसने तुम्हें कुछ कहा क्या?" उसने कहा, "मैं तो सो गया था। मुझे कुछ नहीं कहा। क्या हुआ? मुझे तो कुछ भी पता नहीं।" रात तीन बजे पुनः उसकी पूछताछ की गई। बहुत मारा-पीटा गया।

जेल में बन्द आर्य बन्दियों को भाईजी के बलिदान की सूचना मिलनी चाहिये। यही बाल 19 को शौचालय गया। आर्य बन्दियों से संकेत से सम्पर्क करके यह समाचार दिया गया। सरकार यह समाचार गुप्त रखकर भाईजी के शव को ठिकाने लगाना चाहती थी, परन्तु उदगीर के इन आर्य बन्दियों ने किसी प्रकार से यह पत्र हैदराबाद पहुँचा दिया।

श्री दत्तात्रेयप्रसादजी इस अभियोग के लिये बीदर जाया करते थे। लौहपुरूष स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्दजी के शिष्य पं० रुचिरामजी ने भाई श्यामलालजी का शव प्राप्त करने की एक अद्‌भुत योजना बनाकर श्री दत्तात्रेयप्रसादजी को अविलम्ब बीदर भेजा। जेल अधिकारियों को सरकार का आदेश था कि शव आर्यों कोया परिवार को न सौंपा जाय।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

श्री कृष्ण चरित्र के प्रथम उद्धारकर्ता
महर्षि स्वामी दयानन्द या श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी

-प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

योगेश्वर श्रीकृष्ण महाभारत के उच्चतम पात्रों में गिने जाते है। उन्हें गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण (यत्र योगेश्वर : कृष्ण - अध्याय- 18) कहा गया है। भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण को वेद वेदाग तत्वज: कहा है स्वामी दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण चरित्र की बड़ी प्रशंसा की है। महाभारत में श्रीकृष्ण चरित्र को बहुत अच्छा बताया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं। श्रीकृष्ण योगेश्वर, नीति निपुण तथा महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष के सफल नेता है। यदि श्रीकृष्ण पाण्डव पक्ष के नेता न होते तो पाण्डव पक्ष का क्या बनता, यह सहज अनुमानगम्य है

पौराणिक काल में रासलीला आदि का कृष्ण चरित्र में मिश्रण किया गया। श्रीकृष्ण चरित्र के साथ गोपिकाओं का चीरहरण, राधा के साथ उनका प्रेम सम्बन्ध, कुब्जा दासी आदि की बड़ी अश्लील कथाएँ सब जोड़ दी गयीं। योगेश्वर श्रीकृष्ण महा रसिया व्यभिचारी के रूप में चर्चा में आ गये और पौराणिक कथाओं में भागवत आदि पुराणों की कथाओ मे श्रीकृष्ण का योगेश्वर रूप लुप्त हो गया। श्रीकृष्ण के इस भ्रष्ट चरित्र का मुसलमान, ईसाईयों ने हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिये खूब उपयोग किया। हिन्दुओं का सिर लज्जा से झुक जाता था। वे पौराणिक कथाओं के आलोक में मुसलमान, ईसाईयों को कोई उत्तर नहीं दे पाते थे। कई हिन्दू तो इन अश्लीलताओं से लज्जित होकर धर्म परिवर्तन भी कर लेते थे।

19वीं शताब्दी भारतवर्ष के इतिहास में नवजागरण की शताब्दी के रूप में आयी। सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने हिन्दुओं के कुछ निर्बल पक्षों पर विचार किया और ब्राह्म समाज की स्थापना की। विशेषरूप से सतीप्रथा आदि में सुधार का प्रयास किया (यह आज के हमारे विचार विषय से बाहर है) राजाराम मोहन राय के लगभग 50 वर्ष पश्चात् महर्षि स्वामी दयानन्द का युग आता है, उन्होंने बहुमुखी सुधार का काम किया। स्वामी दयानन्द के कार्यक्षेत्र से धर्म, समाज, साहित्य, राजनीति कुछ भी अछूता न रह गया। उनका कार्य बहुमुखी या सर्वतोमुखी कार्य के रूप में सामने आया। उन्होने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में योगेश्वर श्रीकृष्ण का महाभारत में अतिनिर्मल, निर्दोष चरित्र मिलता है उन्होने कभी कोई पाप नहीं किया। सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

प्रथम संस्करण 1847-75 तथा द्वितीय संस्करण 1882-3 का है। इससे पता चलता है कि स्वामी दयानन्द ने श्रीकृष्ण चरित्र को निर्मल, निर्दोष 1882-83 में ही सिद्ध कर दिया था।

श्रीकृष्ण चरित्र पर वन्देमातरम् के प्रसिद्ध गीतकार, उद्गाता बंकिम चन्द्र चटर्जी ने बहुत सुन्दर विचार किया है। श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी का जन्म 28 जून, 1838 ई० को हुआ था और उनका देहान्त 8 अप्रैल 1894 ई० को हुआ। स्वमी दयानन्द का जन्म फरवरी 1824 ई० तथा मृत्यु दीपावली 1883 ई० है। किसी भी सूरत में स्वामी दयानन्द ने श्रीकृष्ण चरित्र के निर्मल उद्धार का काम 1883 ई० से पूर्व ही कर दिया था। श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी ने श्रीकृष्ण चरित्र पर जो पुस्तक लिखी वह 1886 ई० की है। हिन्दू धर्म एवं श्रीकृष्ण चरित्र के प्रति अश्रद्धेय चर्चा से खिन्न होकर बंकिम चन्द्र ने श्रीकृष्ण चरित्र भाग-1 1886 और भाग-2 सन् 1892 ई० में प्रस्तुत किया। श्री बंकिम चन्द्र के श्रीकृष्ण चरित्र की चर्चा के सन्दर्भ में श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है-

"बंगदेश यदि निश्चेतन और प्राणहीन नहीं होता, तो श्रीकृष्ण चरित्र को लेकर आज के हिन्दू समाज तथा विकृत हिन्दू धर्म पर जो अस्त्राघात है उससे व्यथित तथा सचेतन हो उठता। बंकिम की भाँति तेजस्वी और प्रतिभा सम्पन्न और किसी व्यक्ति ने लोकाचार, देशाचार के विरोध में ऐसे निर्भीक तथा स्पष्ट उच्चारण में स्वमत प्रकाश का साहस नहीं दिखाया है। यहाँ तक कि बंकिम ने प्राचीन हिन्दूशास्त्र को ऐतिहासिक तर्क देकर जिस तरह से उसके सार और असार भागों को अलग किया है, आज उसका सानी पाना कठिन है।"

इस विवेचना से यह नितान्त सुस्पष्ट हो जाता है कि स्वामी दयानन्द ने श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी से 3-4 वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण चरित्र की निर्दोषता को प्रमाणित एवं लिपिबद्ध कर दिया था।

ईशावास्यम

पी-30 कालिन्दी, कोलकाता- 700089

जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि गर्भ में आया या मूठी में धर लिया ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता क्योंकि आकाश अनन्त और सब में व्यापक है। इससे न आकाश बाहर आता और न भीतर जाता वैसे ही अनन्तर सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना कभी नहीं सिद्ध हो सकता। **-सत्यार्थप्रकाश स. 7**

thearyasamaj.org

गत् दिनांक 27/07/14 रविवार को आर्य समाज मोतिहारी का वार्षिक अधिवेशन (निवार्चन) संपन्न हुआ। इस बैठक में जिला सभा के प्रधान/मंत्री समेत अधिकांश अधिकारीगण उपस्थित थे। नये सत्र के लिए निम्नवत् पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किये गए:-

1. **प्रधान-** श्री विनोद कुमार आर्य
2. **उप प्रधान-** श्री मंगल मुनि वान प्रस्थी
   उप प्रधान- श्री नागेन्द्र आर्य
3. **मंत्री-** श्री देवेश चन्द्र गुप्ता
4. **उप मंत्री-** श्री सोना लाल प्रसाद
5. **कोषाध्यक्ष-** श्री राजवल्लभ प्रसाद आर्य
6. **पुस्तकालयाध्क्ष-** श्री सत्य नारायण ठाकुर
7. **अंकेक्षक-** श्री राजकिशोर प्रसाद सिन्हा

अंतरंग सदस्य :-

श्री कमलेश प्रसाद आर्य

श्री धर्मबर्द्धन प्रसाद

श्री वीर समशेर सिंह

इसके अतिरिक्त महिला सभा भी गठन की गई।

आर्य समाज लखना (पटना) के पदाधिकारियों का चुनाव

संरक्षक-	डॉ॰ रामानन्द सिंह आर्य
प्रधान-	श्रीमति प्रमिला देवी आर्या
उपप्रधान-	श्री ललन सिंह आर्य
मंत्री-	डा॰ रंजीत कुमार आर्य
उप-मंत्री-	श्री सुधीर कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष-	श्री धनंजय कुमार आर्य
उप-कोषाध्यक्ष-	श्री रजनीश कुमार आर्य

आर्य समाज लखना (पटना) का वार्षिकोत्सव 7 से 9 अप्रैल 2014 तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आगत विद्वान आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री आगरा, पं॰ दयानन्द सत्यार्थी समस्तीपुर बहन ऋचा योगमयी, खगड़िया एवं पं॰ विनोद कुमार शास्त्री पटना ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री और पं॰ बिनोद कुमार शास्त्री ने सुशोभित किया। वहीं बहन ऋचा योगमयी के क्रांतिकारी विचार ने जन-मन को प्रभावित किया। एक ओर जहां पं॰ दयानन्द सत्यार्थी ने भजन के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर वज्रघात किया वहीं यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अग्निहोत्री जी ने ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि रखकर आर्य समाज को महिमा मण्डित किया। साथ ही सारगर्भित प्रवचन देकर श्रोताओं को सराबोर कर दिया। पं॰ बिनोद कुमार शास्त्री जी ने भी भजनों के माध्यम से अपने विचार प्रकट किये।

विद्वानों ने एक स्वर में कहा कि आर्य समाज संसार का कल्याण चाहता है, इसलिए श्रोताओं से निवेदन करता है कि वे आर्य समाज का सदस्य बनें और सभी बुराइयों को छोड़े। खैनी, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकु, जर्दा आदि का परित्याग कर स्वस्थ जीवन अपनायें जिससे समृद्ध-राष्ट्र का निर्माण हो सके।

अन्त में कार्यक्रम का समापन आर्य समाज लखना (पटना) के संरक्षक डा॰ रामानन्द सिंह आर्य ने किया। उन्होंने कहा कि बुराइयाँ आज दीमक की तरह समाज को चाट रहा है केवल आर्य समाज ही इस कीड़े से समाज को बचा सकता है। आइये हम सब मिलकर नये समाज का निर्माण करें।

डा॰ रंजीत कुमार आर्य

मंत्री, आर्य समाज, लखना (पटना)

thearyasamaj.org

नई चेतना का संचार हुआ। इसके लाभ को देखते हुए आर्य जनों ने इस पर्व को श्रावणी पर्व के रूप में मनाने लगे। जिसके प्रभाव से धर-धर वेद पाठ और यज्ञ कर्म होने लगे जिससे समाज में श्रेष्ठ विचारों संस्कारों आदि का प्रचलन बढ़ गया। गृहस्थों को धर्मोपदेश से उसका जीवन मार्ग प्रशस्त हो गया।

आज पुनः सभी आर्य जन वेद प्रचार के महत्व को समझ कर इसे जन-जन में विस्तारित करें, आलस्य को त्याग यज्ञ के व्रती बने और ऋषि की वसीयत को जन-गण-मन में पहुँचा दे। वेदों का प्रचार हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। इसी से सच्चाई और अच्छाई की स्थापना हो सकती है। दु:खी संसार में सुख का संचार इसी से सम्भव है। आइये वेद प्रचार में तन-मन-धन लगाये।

पं० संजय सत्यार्थी

सह-सम्पादक

मैं अपना मन्तव्य उसी का जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य हैं। मेरी कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि में पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्यावत्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल-चलन है उसका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रीमुनीश्वरानन्द भवन, नया टोला, पटना- 4

के तत्वाधान में

दिनांक 8.9.10 एवं 11 अक्टूबर 2014 को

विद्युत बोर्ड कॉलोनी मैदान, शास्त्री नगर, पटना में

विशाल आयोजन

आर्य महासम्मेलन 2014, पटना

बिहार के आर्य विद्वानों उपदेशको, भजनोपदेशकों, सन्यासियों, आर्य वीरों, वीरांगनाओं एवं कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि तन, मन, धन से सहयोग करें और सम्मेलन में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

गंगा प्रसाद	सत्यदेव प्रसाद गुप्ता	रमेन्द्र कुमार गुप्ता
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मंत्री

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

प्रेषक :
सभा-मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला
पटना-८०० ००४

मुद्रित सामग्री

सेवा में,
श्री/मेसर्स.........................
मो०.........................
पो०.........................
जिला.........................
(प्रेषिती के न मिलने पर यह अंक प्रेषक को ही लौटा दें।)

स्वत्वाधिकारी, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा,, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 के लिए श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता (मंत्री) द्वारा जय उमा प्रिन्टर्स, पटना द्वारा मुदित एवं प्रकाशित।